मंत्र·तंत्र·यंत्र
विज्ञान

श्रावण मास में

१९-७-८९ से १७-८-८९ तक

सर्व सिद्धि प्रदायक

भगवान सिद्धेश्वर प्रयोग

श्रावण मास भगवान शिव का सर्वाधिक अनुकूल मास है, शिव भक्त पूरे वर्ष भर श्रावण के महीने की प्रतीक्षा करते रहते है, फिर इस वार तो श्रावण मास का प्रारम्भ मकर राशि से हो रहा है, और मकर राशि में ही श्रावण मास का समापन हो रहा है, जो कि अपने आपमें एक विशिष्ट प्रयोग है, एक ऐसा योग है, जो कई वर्षों बाद आया है।

''मकर'' सुख सौभाग्य, धन, यश, मान, पद, प्रतिष्ठा को कहते है। और इस बार श्रावण का प्रारम्भ ''मकर'' से हो रहा हैं, और इसका समापन भी ''मकर'' से ही हो रहा है। ''मकर'' का तात्पर्य भगवान शिव है, ''मकर'' का अर्थ सर्व सिद्धिप्रदायक है, ''मकर'' का तात्पर्य जीवन की पूर्णता है, और इस वर्ष ऐसा ही उत्तम योग आया है, प्रत्येक साधक को और शिव भक्त को इस श्रावण मास में यह सर्वसिद्धि प्रयोग सम्पन्न करना ही चाहिए।

सर्व सिद्धिप्रदायक प्रयोग

सर्व सिद्धिप्रदायक प्रयोग का तात्पर्य उन समस्त मनोकामनाओं की पूर्ति है, जो व्यक्ति की इच्छा होती है। साधक को चाहिए कि वह ''हर हर महादेव'' का घोष करते हुए, पूर्ण श्रद्धा के साथ इस प्रयोग को सम्पन्न करे। इस प्रयोग से निश्चित पुत्र-प्राप्ति, पुत्र-सुख, और सौभाग्यवृद्धि तो होती ही है, रोगों के निवारण में भी यह प्रयोग अपने आपमें अचूक है। भगवान शिव को वैद्यनाथ कहते हैं, और इस प्रयोग से सम्पन्न जल का पान, यदि साधक एक महीने तक करे, तो निश्चय ही वह समस्त प्रकार के रोगों से मुक्त हो जाता है, भगवान शिव ने कामदेव पर विजय प्राप्त की थी और इसीलिए कमजोर और निर्बल मनुष्यों के लिए यह प्रयोग ''संजीवनी'' की तरह है। जो इस प्रयोग को आजमा लेता है, उसकी नपुंसकता कमजोरी और शारीरिक क्षीणता दूर होती है और एक महीने के अन्दर अन्दर वह पूर्ण पौरूषवान बन जाता है।

स्त्रियों के लिए तो यह ''हर गौरी'' प्रयोग है, जिसके माध्यम से वे इस प्रयोग को सम्पन्न कर सौभाग्य की कामना करती है, इस प्रयोग से पति को दीर्घायु प्राप्त होती है, और उसके जीवन के सारे कष्ट दूर हो जाते है। कुंवारी बालिकाएं इस प्रयोग को करने से मनोवांछित वर प्राप्त करने में सफल हो पाती है। भगवान शिव को ''रूद्र'' कहते हैं, जो कि शत्रुओं के पूर्ण संहारक है, इस प्रयोग को सपन्न करने से साधक शत्रुओं पर विजय प्राप्त करता है, अपने विरोधियों पर हावी होता है और सभी दृष्टियों से सफलता प्राप्त कर पाता है। वास्तव में ही यह प्रयोग पूरे वर्ष का सौभाग्य प्रयोग है, जिसे प्रत्येक पुरूष और स्त्री को सम्पन्न करना चाहिए।

(शेष कवर के तीसरे पृष्ठ पर)

वर्ष–९

अंक ६–

जून-१९८९

✲ ✲ ✲ ✲ ✲ ✲ ✲ ✲ ✲ ✲ ✲ ✲

मुद्रक प्रकाशक लेखक

एवं

सम्पादक

योगेन्द्र निर्मोही

सम्पर्क—

मन्त्र-तन्त्र-यन्त्र विज्ञान

डॉ० श्रीमाली मार्ग

हाईकोर्ट कोलोनी,

जोधपुर–३४२००१ (राज०)

टेलीफोन : २२२०९

आनो भद्राः कृतयो यन्तु विश्वतः

मानव जीवन की सर्वतोन्मुखी उन्नति प्रगति और

भारतीय गूढ़ विद्याओं से समन्वित मासिक

मन्त्र-तन्त्र-यन्त्र विज्ञान

प्रार्थना

परमं पदेवं गुरुभ्यो पर गुरुभ्यो पारमेष्ठि
गुरुभ्यो मनस त्वक् पाद प्राण गुरुभ्यो नमः

हे गुरूदेव ! आप महान है, मैं आपको, परम गुरू को तथा पारंमेष्ठि गुरुदेव को मानस से प्रणाम करता हुआ प्राणतत्व जाग्रत होने की कामना करता हूं ।

गुरू पूर्णिमा के अवसर पर

गुरू रहस्य सिद्धि

एक बार मण्डन मिश्र ने भगवत पाद शंकराचार्य को पूछा कि जीवन में हजारों प्रकार की साधनाएं देखी गयी है, सैकड़ों देवी देवता इष्ट हो सकते है, और विभिन्न साधना विधियां आदि प्रचलित है, परन्तु इनमें से मूल साधना कौनसी है वह साधना कौनसी है, जिसके द्वारा सारी साधनाएं स्वतः सिद्ध हो जाय, वह कौनसी साधना है, जिससे जीवन में भोग और मोक्ष दोनों प्राप्त हो जाय और वह साधना रहस्य क्या हैं, जिसके सम्पन्न करने पर जीवन में किसी प्रकार का कोई अभाव न रहे।

शंकराचार्य ने दो क्षण मण्डन मिश्र की ओर देखा और बोले-यदि सत्य ही जानना चाहते हो तो इस प्रकार की एक मात्र साधना गुरू सिद्धि साधना ही है। मनुष्य तो क्या, ऋषियो मुनियो और साधु सन्यासियों ने भी एक स्वर से स्वीकार किया है, कि गुरू साधना के द्वारा ही जीवन में पूर्णता पाई जा सकती है, यहां तक कि महर्षि वशिष्ठ और विश्वामित्र जैसे ऋषियों ने भी गुरू साधना को ही अपना आधार बनाया, युग पुरुष भगवान श्रीराम और सोलह कला पूर्ण श्री कृष्णचन्द्र ने भी गुरू साधना के द्वारा ही अभूतपूर्व सिद्धियां प्राप्त की।

ब्रह्मोपनिषद में तो स्पष्ट रूप से बताया गया है कि भगवान शिव ने स्वयं गुरू साधना के महत्व को स्वीकार किया, और परब्रह्म को ही गुरू मानकर उसकी साधना सम्पन्न की। स्वयं विष्णु ने भी इसी पद्धति को अपनाया इससे यह स्पष्ट है कि जीवन का आधार "गुरू" है। **हम भले ही अपनी बुद्धि के तर्क में उलझ जांय, हम भले ही आत्म रूप को नहीं पहिचाने, परन्तु जब तक हम गुरू साधना को पूर्णता के साथ सम्पन्न नहीं कर लेते तब तक जीवन में श्रेष्ठता, सफलता, और पूर्णता संभव नहीं हो पाती।**

आगे आचार्यों में गुरू गोरखनाथ अत्यन्त श्रेष्ठ योगी हुए, उन्होंने भी गुरू को ही जीवन का आधार बनाया और गुरू साधना के द्वारा जीवन में अद्वितीय सिद्धियां प्राप्त की। कबीर का तो पूरा साहित्य ही गुरू साधना से भरा हुआ है, गोस्वामी तुलसीदास ने रामचरित मानस का प्रारम्भ करते हुए गुरू की साधना कर उन्हें भक्ति भाव से प्रणाम कर इस अद्वितीय ग्रन्थ की रचना प्रारंभ की, जिससे कि यह रचना अद्वितीय और कालजयी बन सके।

आज के युग में भी यदि पूर्णता तक पहुंचना हैं, यदि कुण्डलिनी चक्र जागृत करने है, यदि अपने आध्यात्मिक पक्ष को पूर्णता देनी है, यदि जीवन में पूर्ण भौतिक सुख उपलब्ध करने है, और यदि विविध प्रकार की साधनाओं में सिद्धियां प्राप्त करनी है, तो इसका एक मात्र साधन गुरू साधना ही है, और इस साधना के द्वारा ही जीवन में सफलता पूर्णता पाई जा सकती है।

यो तो मेरे जीवन में कई साधनाओं का समावेश हुआ है, परन्तु मैंने अपने जीवन में गुरू साधना को ही महत्व दिया है, आज जो मैं साधनाओं के क्षेत्र में सफल माना जाता हूँ जो विभिन्न प्रकार की सिद्धियां मैंने प्राप्त की है, इन सब का आधार गुरू साधना ही है, और

मैं समझता हूं कि यदि साधक थोड़ा सा भी विवेकवान है, तो वह अपने जीवन में गुरू साधना को अवश्य हीं महत्व देगा।

गोपनीय प्रयोग

मेरे पिताजी ने मेरे जन्म लेने के बाद सन्यास ले लिया था, और सन्यास के क्षेत्र में उन्होंने पूर्णता और सफलता प्राप्त की। एक बार जब वे साठ वर्ष से भी ज्यादा आयु के हो गये थे तब मेरी भेंट उनसे केदारनाथ के पास हुई थी, और मैंने उनसे निवेदन किया था, कि आप मेरे पिता है, मुझे जीवन की कोई ऐसी साधना दीजिए जिससे कि मैं गृहस्थ जीवन में रहते हुए, उस साधना को सम्पन्न कर सकूं और सभी प्रकार से भौतिक आध्यात्मिक सफलता अर्जित कर सकूं।

आप तो साधनाओं और सिद्धियों के भण्डार है, और पूरे हिमालय में आपका नाम है। मैं तो अपने जीवन में केवल एक ही साधना करना चाहता हूं, जो कि सरल हो, मेरे अनुकूल हो और जिसे एक बार करने पर ही सफलता मिल जाय, तब उन्होंने अत्यन्त वात्सल्य भाव से मेरे सिर पर हाथ फेरते हुए, अत्यन्त गोपनीय और दुर्लभ "गुरू रहस्य सिद्धि साधना" प्रयोग समझाया था, फिर घर आ कर मैंने उसे सिद्ध किया और वास्तव में ही उस दिन से जिस प्रकार से आर्थिक उन्नति हुई हैं, वह चमत्कार ही है। उस दिन से जिस प्रकार से मुझे विविध अनुभव और सिद्धियां प्राप्त हुई है, वे मेरे लिए अलौकिक है, कभी कभी तो मैं स्वतः प्रवचन करने लग जाता हूं, और किसी भी विषय पर घण्टे दो घण्टे धारावाहिक रूप से बोलने लग जाता हूं। मेरे ज्ञान को, मेरे भाषण को और मेरे सम्मोहक व्यक्तित्व को देख कर मेरे परिचित और दूर दूर के लोग चमत्कृत हो उठते है, पर मैं यह समझता हूं कि इसका आधार 'गुरू रहस्य सिद्धि साधना" ही है, जिस साधना को मेरे पिताजी ने कृपापूर्वक मुझे दी थी।

साधना रहस्य

इस साधना को किसी भी गुरूवार, पुष्य नक्षत्र (इस वर्ष के पुष्य नक्षत्रों की सूची अप्रेल के अंक में दी गई है) अथवा गुरू पूर्णिमा (१८-७-८९) को सम्पन्न की जा सकती है, जब भी मन में गुरू के प्रति श्रद्धा का भाव हो, जब भी मन में उच्चकोटि की साधना सम्पन्न करने की इच्छा हो, तब इस साधना को सम्पन्न कर लेना चाहिए, इस साधना को पुरूष या स्त्री कोई भी सम्पन्न कर सकता है।

साधक प्रातः काल उठ कर स्नान कर स्वच्छ धुली हुई पीली धोती धारण करे, और कन्धे पर भी पीली धोती ही पहने। फिर अपने सामने पूजन सामग्री रख दे, जिसमें जल पात्र, कुंकुम, केसर, शुद्ध घृत का दीपक, अगरबत्ती, नारियल, दूध का बना हुआ प्रसाद, और श्रेष्ठ सुन्दर आकर्षक गुरु चित्र हो, इसके साथ ही साथ स्फटिक माला भी अपने साथ रखनी चाहिए, इसका उपयोग इस साधना में किया जाता है।

इसके बाद सामने थाली में निम्न प्रकार से परम गोपनीय और दुर्लभ गुरू यंत्र का अंकन कुंकुम या केसर से करे।

गुरू यंत्र

गु

य	प	रा	त
या	ॐ	र	णा
ना	त्वा	य	म

बाएँ: नमः — दाएँ: रू

भ्यो

फिर इस यंत्र पर अत्यन्त तेजस्वी और भगवान शिव मंत्र युक्त "गुरु रहस्य सिद्धि यंत्र स्थापित" कर दें। यह यंत्र संसार का सर्वाधिक तेजस्वी और दुर्लभ यंत्र माना गया है। इस यंत्र को पूज्य गुरुदेव से प्राप्त कर लेना चाहिए।

इस यंत्र को थाली में स्थापित कर सामने दीपक लगाना चाहिए, और फिर इस यंत्र की संक्षिप्त पूजा कर,

नैवेद्य चढ़ा कर भक्ति भाव से प्रणाम करे, कि मुझे गुरू रहस्य सिद्धि प्राप्त हो. मैं जीवन में भोग और मोक्ष दोनों की कामना रखता हूं, मेरी इच्छा है कि आप अपने पूर्ण ब्रह्म स्वरूप में मेरे सामने उपस्थित हो, और मेरे हृदय में स्थापित हो जिससे कि आप में निहित सारा ज्ञान और सारी सिद्धियां मुझे स्वतः प्राप्त हो सके और मैं सिद्धि पुरूष बन कर जीवन में लोगों का सभी दृष्टियों से पूर्ण कल्याण कर सकूं।

इसके बाद स्फटिक माला से निम्न परम गोपनीय ब्रह्मोपनिषद में वर्णित इस गुरू मंत्र की २१ माला मंत्र जप करे। मत्र जप पूरा होने के बाद उस स्फटिक माला को अपने गले में धारण कर ले, ऐसा करते ही साधक को एक अलौकिक सा प्रकाश अनुभव होगा, और ऐसा लगेगा कि जैसे सम्पूर्ण ज्ञान स्वरूप गुरूदेव स्वयं उसके हृदय में स्थापित हो गये है।

ब्रह्मोपनिषद वर्णित गुरू मन्त्र

ॐ ह्रीं श्रीं ऐं वीं दुं तें श्रीं परम क्लीं क्लीं ह्रीं तत्वाय श्रीं स्त्रीं श्रृं श्रैं नारायणाय हुं हें हौं गुरुभ्यौ श्रीं नमः ॥

यह मन्त्र परम गोपनीय है, अतः बिना गुरू की आज्ञा के सामान्य व्यक्ति को यह मंत्र नहीं दिया जाना चाहिए। साधना समाप्ति के बाद किसी ब्राह्मण को या कुंवारी कन्या को भोजन करा दे और उसे यथोचित भेंट दक्षिणा आदि दे कर साधना सम्पन्न करे। मंत्र जप के बाद पूर्ण श्रद्धा से गुरू आरती सम्पन्न करे।

ब्रह्मोपनिषद युक्त गुरू रहस्य सिद्धि यंत्र

इसके लिए आपको धनराशि भेजने की जरूरत नहीं है, केवल एक पत्रिका सदस्य बनाने पर यह परम दुर्लभ यन्त्र आपको सर्वथा मुफ्त में प्राप्त हो सकेगा, इसके लिए आप नीचे दिया हुआ प्रपत्र किसी कागज पर उतार कर भर कर हमें भेज दे, जिससे कि समय पर आपको यह अद्वितीय चैतन्य गुरु रहस्य सिद्धि यंत्र सुविधापूर्वक प्राप्त हो सके।

गुरू रहस्य सिद्धि यन्त्र---प्रपत्र

मैं पत्रिका सदस्य हूं, अतः इस दुर्लभ और महत्वपूर्ण यंत्र को प्राप्त करने का अधिकारी हूं. आप १०५) रू. की वी. पी. से उपरोक्त दुर्लभ गोपनीय यंत्र मुझे वी.पी. से भिजवा दे, मैं पोस्टमेन को धनराशि दे कर यह यंत्र छुड़ा लूंगा, वी. पी. छूटने पर मेरे निम्न मित्र को पत्रिका का एक वर्ष का सदस्य बना दे, और उसे नियमित रूप से पत्रिका भेजते रहे–

मेरी पत्रिका सदस्यता संख्या ....

मेरा नाम ....

मेरा पूरा पता ....

....

मैंरे उपरोक्त पते पर आप इस यंत्र को भिजवा दें मैं वी.पी. छुड़ा लूंगा, और वी.पी. छूटने पर आप मेरे निम्न मित्र को इस वर्ष का पत्रिका सदस्य बना दे।

मेरे मित्र का नाम ....

मेरे मित्र का पूरा पता ....

....

संसार की दुर्लभ

अष्टसिद्धि साधना

प्रयोग

यों तो हमारे शास्त्रों में सैकड़ों साधनाएं दी हुई है, परन्तु "अष्टसिद्धि" साधना तो जीवन का एक अद्वितीय प्रयोग और साधना है। स्वयं विश्वामित्र ने इस साधना को सम्पन्न करने के बाद बताया था कि इससे ज्यादा महत्वपूर्ण और कोई साधना नहीं है, इस साधना को करने के बाद अन्य किसी भी प्रकार की साधना करने की जरूरत नहीं है। इस एक साधना से ही जीवन के सारे मनोरथ पूर्ण हो जाते है, और व्यक्ति जिस प्रकार से चाहता है, उसी प्रकार से सफलता प्राप्त कर लेता है।

महर्षि विश्वामित्र ने इन अष्ट सिद्धियों के नाम इस प्रकार बताये है—

(१) द्वि-लोचना

यह श्रेष्ठ देवी है, सिद्ध से करने से विविध प्रकार के वस्त्र, अलंकार स्वर्ण आदि स्वतः प्राप्त होता रहता है। विश्वामित्र ने इसे सर्वश्रेष्ठ देवी कहा है, जब यह सिद्ध हो जाती है तो हर क्षण साधक के साथ रहती है, और वह जब भी किसी भी पदार्थ की याचना करता है तो वह तुरन्त पूर्ति करती है।

मन्त्र-ध्यान

द्वि-भुजां शुक्ल रूपां च खेलत्खंजन भामिनीं।
द्वि-लोचनां शशिकलां सिन्दूर तिलकोज्ज्वलां॥
तप्त हाटक निर्माण नानालंकार-भूषितां।
दाड़िमी बोज सदृश - दशन - द्युति - शोभनां॥

(२) सिद्धि दा

यह देवी जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में सिद्धि देने वाली है और साधक अपने मन में जिस कार्य की पूर्णता चाहता है, वह कार्य तुरन्त इस देवी के माध्यम से सम्पन्न हो जाता है, इस सिद्धि को सिद्ध करने पर जीवन का कोई भी संकल्प, कोई भीं लक्ष्य अधूरा नहीं रहता और व्यक्ति निरन्तर उन्नति करता रहता है।

मन्त्र-ध्यान

सिद्धिदा शुक्ल चार्वा यज् ज्ञात्वा सिद्धिता व्रजेत्।
कुन्द पुष्प समाभासां द्विभुजां लोल लोचनां॥
शुक्ल वस्त्र परीधानां शुक्लाभरण भूषितां।
सिन्दूर तिलकद्दीप्तां खंजनांचित लोचनां॥

(३) कटाक्षा

यह गन्धर्व जाति की अप्सरा है, और इसे सिद्ध करने पर वह प्रेमिका रूप में निरन्तर साधक के साथ रहती है, और प्रत्येक प्रकार से उसे सुख प्रदान करती हुई, साधक को धन वस्त्र आदि से सम्पन्न करती है।

मन्त्र-ध्यान

शुद्ध स्फटिक संकाशां श्वेत वस्त्रोपरिद्-स्थितां।
हास्य युक्तां प्रसन्नास्यां कटाक्ष विशिखोज्ज्वलां॥

कन्दर्प वनुराकार भूतलां परिशोभितां।
मृणाल सदृशाकार वाहु वल्ली विराजिता॥

(४) लोल-लोचना

यह देवी जीवन में भोग, सुख, सौभाग्य धन-धान्य, यश, प्रतिष्ठा, आदि देने में सिद्ध देवी है, इसको सिद्ध करने पर भौतिक दृष्टि से जीवन में किसी प्रकार की कोई कमी नहीं रहती।

मन्त्र-ध्यान

कुन्द पुष्प समाभासां द्वि–भुजा लोल लोचनां।
कटाक्ष विशिखोद्दीप्तां सिन्दूर तिलकोज्ज्वलां॥

दाड़िमी बीज सदृश दशन द्युतिमुज्ज्वलां।
द्वि-भुजां चन्द्र वदनां ध्यायेदात्म विभूतये॥

(५) शशि-शेखरा

यह वायवीय सिद्धि देवी है, इसे सिद्ध करने पर व्यक्तिवायु को मार्ग से आने जाने की सिद्धि प्राप्त हो जाती है। ऐसा साधक सूक्ष्म शरीर से कहीं पर भी विचरण करने में समर्थ होता है, वास्तव में ही यह अपने आप में महत्वपूर्ण सिद्धि है।

मन्त्र-ध्यान

शरच्चन्द्र प्रतीकाशां द्वि-भुजां शशि शेखरां।
लोचन द्वय संयुक्तां खेलत् खंजन गामिनीं॥

सिन्दूर तिलकोद्दीप्तामंजनांचित लोचना।
कटाक्ष विशिखोपेतां मूलता परिशोभितां॥

[६] कुटिला

यह अत्यन्त ही प्रचण्ड देवी है, और शत्रुओं का संहार करने में पूरी तरह से समर्थ है, इसे सिद्ध करने पर जीवन में शत्रु बाधा नहीं रहती और मुकदमे आदि में निश्चित रूप से पूर्ण सफलता प्राप्त होती रहती है। वास्तव में ही प्रत्येक साधक को यह साधना सिद्ध करनी चाहिए, जिससे उसके मार्ग में और जीवन में किसी प्रकार की बाधा या अड़चन न आवे।

मन्त्र-ध्यान

राका चन्द्र प्रतीकाक्षां द्वि भुजां चन्द्र शेखरां।
पूर्ण चन्द्र मुख श्रेणीं कुटिलालक शोभितां॥

हास्य युक्तां प्रसन्नास्यां श्वेत वस्त्र परिच्छदां।
श्वेताभरण शोभाढ्या किशोरी नव यौवनां॥

[७] धनदा

जीवन में अतुलनीय धन, व्यापार वृद्धि और आकस्मिक धन प्राप्ति के लिए यह श्रेष्ठ सिद्ध देवी है, जिसे प्रत्येक साधक सिद्ध करना चाहता है।

मन्त्र-ध्यान

केतकी पुष्प संकासा भूतला परिभूषितां।
नाना कटाक्ष संयुक्तां मत्त-द्विरद-गामिनीम्॥

नानालंकार सुभगां पीत वस्त्र परिच्छदां।
पीत गन्ध प्रलिप्तांगीं सिन्दूर तिलकोज्ज्वलां॥

[८] नवयौवना

पूर्ण आरोग्य, रोग रहित जीवन, आकर्षक शरीर, और निरन्तर यौवन प्रदान करने में समर्थ यह देवी जीवन के लिए आवश्यक है, और सिद्धिदायक है, प्रत्येक साधक को अवश्य ही इसकी साधना सिद्ध करनी चाहिए।

मन्त्र-ध्यान

शुद्ध स्फटिक संकासा हरिद् वस्त्र विनोदिनीं।
नानालंकार सुभगां पीत माल्य परिच्छदां॥

कटाक्ष विशिखाद्दीप्तां सिन्दूर तिलकोज्ज्वलां।
हास्य युक्ता प्रसन्नास्या किशोरीं नव-यौवना॥

उपरोक्त आठों मन्त्र ध्यान अपने आपमें गोपनीय और दुर्लभ है साधक अपने जीवन में इस प्रकार की साधना सिद्ध कर सकता है।

विश्वामित्र ने स्वयं इस साधना को और इनमें से प्रत्येक सिद्धिदायक देवी को सिद्ध कर दुनियां को यह बता दिया था कि जो दृढ़ निश्चयी होते है, जो अपने जीवन में कुछ करना चाहते है, जो स्वयं चमत्कार देखना चाहते है और दुनियां को चमत्कार दिखाना चाहते है, उनके लिए यह "अष्ट सिद्धि साधना" जीवन की श्रेष्ठतम साधना है, कोई अभागा व्यक्ति ही होगा कि इस इस प्रकार की श्रेष्ठ साधना प्राप्त होने के बावजूद भी इन सिद्ध देवियों को अपने वश में न कर सके और सफलता प्राप्त न कर सके।

साधना कब करे ?

तांत्रिक ग्रन्थों में इस साधना को अत्यन्त दुर्लभ, गोपनीय और महत्वपूर्ण बताया है, उन्होंने स्पष्ट रूप से बताया है कि यह साधना केवल शुक्रवार की रात्रि को ही सम्पन्न की जाती है, और इस साधना में तीन शुक्रवार का प्रयोग करना चाहिए।

कहने का भाव यह है कि पहली शुक्रवार की रात को इस साधना को प्रारम्भ करे, अगले शुक्रवार की रात्रि को फिर इसी साधना को करे, और इसके बाद फिर अगले शुक्रवार की रात्रि को यह साधना सम्पन्न कर सिद्धि प्राप्त करे, इस प्रकार से इस साधना में तीन लगातार शुक्रवार का प्रयोग होता है।

साधना सामग्री

इस साधना में निम्न पदार्थों की आवश्यकता होती है, जिसे साधक को चाहिए कि पहले से ही तैयार कर के रखे- (१) जल पात्र, (२) अष्टगन्ध (३) इक्कीस पुष्प (४) दूध का बना हुआ प्रसाद (५) आठ घृत के दीपक।

इसके अलावा संबंधित सिद्ध देवी का यंत्र भी आवश्यक है। इसमें प्रत्येक देवी का अलग अलग यंत्र तैयार होता है, जो कि पूर्ण रूप से सिद्ध और मंत्र चैतन्य होता है। साधक चाहे तो इनमें से किसी एक सिद्ध देवी की साधना सम्पन्न कर ले, और चाहे तो एकसाथ आठों सिद्ध देवियो की साधना प्रारम्भ कर दें।

अधिकतर साधक इन आठो सिद्धियों को एक साथ सम्पन्न करता है, जिससे कि उसके जीवन में सभी दृष्टियों से पूर्णता सफलता और श्रेष्ठता प्राप्त होती है, वास्तव में ही प्रत्येक साधक को यह साधना सिद्ध कर ही लेनी चाहिए।

साधना कैसे करे ?

शुक्रवार की रात्रि को साधक या साधिका स्नान कर

सफेद धोती या सफेद साड़ी पहन ले, अपने शरीर पर सभी वस्त्र सफेद ही धारण करे, फिर सामने किसी पात्र में "अष्टगन्ध" से उस सिद्ध देवी का नाम लिखे, जिसे सिद्ध करना चाहता है, यदि आठों सिद्धियों को एक साथ सम्पन्न करना चाहता है, तो आठों सिद्धियों के नाम किसी तिनके की सहायता से या चांदी की शलाका से पात्र में लिख दे और उस पर चावल की ढेरी बना कर इस पर संबधित सिद्ध देवी का यत्र स्थापित कर दें।

फिर जल से और अष्टगन्ध से देवी की पूजा करे, और प्रत्येक के सामने एक एक पुष्प समर्पित करे, इस प्रयोग में किसी भी प्रकार के पुष्प काम में लाये जा सकते है।

बाद में आठ पुष्प बिछाकर उस पर आठ दीपक स्थापित करे, जो कि शुद्ध घृत के हो, और दीपको को जला ले, फिर चारों दिशाओं में एक एक पुष्प फेंक दे और एक पुष्प अपने आसन के नीचे रख दे। इस प्रकार २१ पुष्पों का प्रयोग किया जाना है।

इसके बाद जिस देवी को सिद्ध करना है, उसके मंत्र ध्यान का ३६ बार उच्चारण करे। आठों देवियों को सिद्ध करना है, तो आठों मंत्र ध्यान ३६ बार उच्चारण करें।

फिर अगले शुक्रवार को भी इसी प्रकार प्रयोग कर, ३६ बार उच्चारण करे और तीसरे शुक्रवार को भी ऐसा ही करे। इस प्रकार तीनों शुक्रवारों को मिलाकर १०८ बार उच्चारण हो जाता है।

तीसरे शुक्रवार को जब मंत्र जप उच्चारण पूरा हो जाय और उस समय वह संबंधित सिद्ध देवी सामने उपस्थित हो जाय तो विचलित नहीं हो तथा घबराये नहीं। अपने आसन के नीचे जो पुष्प रखा हुआ है, उसे वहां से हटाकर देवी के दाहिने हाथ में दे दे, इस प्रकार करने पर वह देवी सिद्ध हो जाती है।

तीसरी बार या तीसरे शुक्रवार की रात्रि को जब देवी सिद्ध हो जाय और उसके दर्शन हो जाय तब संबंधित यंत्र सामने पूजा स्थान में स्थापित कर दें, भविष्य में जब भी उस देवी को बुलाना हो, तो उस से सबंधित ध्यान मंत्र उच्चारण करने पर वह देवी प्रत्यक्ष प्रगट हो कर कार्य पूरा कर लेती है।

यदि साधक आठों सिद्ध देवियों को एक साथ सिद्ध करता है, तो भी भविष्य में इन आठों में से जिस देवी को भी अपने सामने बुलाना चाहे या जिस देवी से संबंधित कार्य सम्पन्न करना चाहे, उस देवी से संबंधित यन्त्र ध्यान का उच्चारण किया जाय तो वह सामने स्पष्ट होती है और साधक का मनोवांछित कार्य तुरन्त पूर्ण कर लेती है।

इस प्रकार यह साधना सिद्ध होती है, और एक बार सिद्ध करने के बाद पूरे जीवन भर वह अष्ट सिद्धि साधना सिद्ध रहती है।

वास्तव में ही इस घोर कलियुग में यह एक चमत्कारिक साधना है, और यदि साधक प्रामाणिक संबंधित यन्त्र प्राप्त कर पूर्ण श्रद्धा के साथ साधना सम्पन्न करता है, तो उसे अवश्य ही पूर्ण सिद्धि प्राप्त होती है।

शिष्यों के लिए दुर्लभ

पुरश्चरण प्रयोग

रसोल्लास तंत्र अपने आप में अत्यन्त गोपनीय और महत्वपूर्ण तंत्र रहा है, जो कि शिष्य को पूर्णता तक पहुँचाने की क्रिया का आधार है। इस तंत्र में यह बताया गया है कि यदि कोई शिष्य बार बार साधना में असफल हो रहा हो, या उसे अपने जीवन में पूर्णता प्राप्त नहीं हो रही हो, अथवा किसी प्रकार की बाधा या अड़चन आ रही हो तो उसे पुरश्चरण प्रयोग सम्पन्न करना चाहिए।

पुरश्चरण क्या है ?

साधना में सिद्धि और सफलता के लिए तीन प्रकार की बाधाएं शिष्य या साधक के सामने उपस्थित होती है। (१) पूर्वजन्म के किये गये दोषों की वजह से या पूर्व जन्म में गुरु अनादर आदि से जो दोष व्याप्त होता है, वह पुरश्चरण प्रयोग से ही समाप्त होता है। (२) यदि वर्तमान जीवन में देवताओं के प्रति अनादर या गलत तरीके से मंत्र जप आदि किया हो तब भी साधना दोष व्याप्त होता है और इस दोष को भी पुरश्चरण प्रयोग से ही दूर किया जा सकता है और (३) वर्तमान जीवन में यदि मन में गुरू के प्रति निरादर रहा हो, उनके सामने अभद्रता या असौम्यता प्रदर्शित की हो या मन में गुरू के प्रति अपशब्द, अपमान आदि भावनाएं व्यक्त हुई हो तब भी साधक या शिष्य को दोष व्याप्त होता है और इसके लिए भी पुरश्चरण प्रयोग को ही सर्व श्रेष्ठ उपाय बताया है।

कहते है, कि जब विष्णु का बाणासुर से युद्ध हो रहा था, तब स्वयं भगवान शिव बाणासुर के पक्ष में आकर खडे हो गये उस समय भगवान विष्णु ने पुरश्चरण प्रयोग सम्पन्न कर भगवान शिव से युद्ध किया और उन्हें पराजित कर बाणासुर की भुजाएं काट डाली।

इसी प्रकार एक बार रूद्र ने स्वयं भस्मासुर को यह वचन दे दिया कि तू जिसके सिर पर भी हाथ रखेगा वह भस्म हो जायेगा, और भस्मासुर ने भगवान शिव के ऊपर ही हाथ रख कर उसे भस्म कर देना चाहा, जिससे कि पार्वती को प्राप्त कर सके, ऐसी स्थिति में जब भगवान शिव विष्णु के पास पहुँचे तो विष्णु ने पुरश्चरण प्रयोग सम्पन्न कर भस्मासुर के सामने मोहिनी रूप धारण कर उसे स्वयं अपने ही हाथों भस्म करवा दिया।

वास्तव में ही पुरश्चरण प्रयोग प्रत्येक साधक और शिष्य के लिए आवश्यक है। इस तंत्र में तो यहां तक बताया गया है कि प्रत्येक पूर्णिमा को महीने में एक बार अवश्य ही इस प्रकार का प्रयोग सम्पन्न कर देना चाहिए, जिससे कि उस महीने में जो भी दोष व्याप्त हुए, हो, वे समाप्त हो सके, और साधना में सकलता प्राप्त हो सके।

भगवान शिव ने स्वयं पार्वती को समझाते हुए कहा है कि प्रत्येक साधना में सिद्धि अवश्य ही प्राप्त हो सकती है, यदि साधना से पूर्व पुरश्चरण प्रयोग सम्पन्न कर लिया जाय। जो तंत्र साधक हैं, जो तंत्र के क्षेत्र में अथवा साधना के क्षेत्र में पूर्णता प्राप्त करना चाहते है, उनके लिए तो यह पुरश्चरण पद्धति वरदान स्वरूप है। यह प्रयोग एक ऐसा रत्न है, जिसके द्वारा प्रत्येक साधना में अवश्य ही सिद्धि प्राप्त होती है।

एतत् तन्त्रानुसारेण पुरश्चर्या करोति यः।
स सिद्धिः स गणः सौ पि विष्णुर्न च संचयः॥

अर्थात् जो इस प्रकार के उच्चकोटि के पुरश्चरण तंत्र को जानकर किसी भी साधना से पूर्व यह पुरश्चरण प्रयोग सम्पन्न कर लेता है, वह पूर्ण रूप से सिद्ध होता है और दूसरे शब्दों में वह स्वयं विष्णु स्वरूप वन जाता है. इसमें किसी प्रकार का संदेह नहीं।

उच्चकोटि के योगियों और सन्यासियों ने भी यह स्वीकार किया है कि कई कारणों से जीवन में साधनाओं में सफलता नहीं मिल पाती, इसमें इस जन्म और पूर्व जन्म के दोषों की वजह से बाधाएं आती रहती है, जब तक इन बाधाओं तथा दोषों को दूर नहीं किया जाता, तब तक साधना में सिद्धि प्राप्त नहीं हो सकती, और इन दोषों को दूर करने का कोई अन्य उपाय नहीं है, केवल मात्र एक ही उपाय है "पुरश्चरण तंत्र" या दूसरे शब्दों में पुरश्चरण प्रयोग जिसकी वजह से साधना में सिद्धि और सफलता प्राप्त हो पाती है।

पुरश्चरण प्रयोग कब करे ?

प्रश्न यह उठता है, कि किस मुहूर्त में कब यह प्रयोग सम्पन्न करना चाहिए जिससे कि सभी जन्मों के दोष दूर हो सके, और जीवन तथा शरीर शुद्ध, निर्मल, पवित्र एवं दिव्य बन सके।

इसके लिए इसी तंत्र में स्पष्ट रूप से बता गया है-

न तंत्र काल-नियमः शुद्धाशुद्धं वरानने।
न रिक्ता न च मुद्रा च पुरश्चरण कर्मणि॥
न तंत्र चंचलापांगि मल मासं विचारयेत्
जप कालो महेशानि कोटि सूर्य ग्रहः समः
पु० खो० तंत्र २/१४-१५

भगवान शिव ने पार्वती को संबोधित करते हुए पुरश्चरण पद्धति के बारे में कहा हैं, कि हे चंचल नेत्र वाली पार्वती! इस पुरश्चरण प्रयोग को करने के लिए समय का कोई नियम नहीं है, इस प्रयोग में शुद्ध और अशुद्ध का कोई विचार नहीं है इन प्रयोग में यदि रिक्ता तिथि या भद्रा जैसी अशुभ तिथियां भी हो तब भी कोई दोष नहीं लगता, यदि ऐसे समय में मल मास या अधिक मास चल रहा हो, तब भी विचार नहीं करना चाहिए। हे, पार्वती! यह बिल्कुल सही है, कि यह प्रयोग, साधक सही ढंग से सम्पन्न कर लेता है, तो करोड़ों सूर्य के समान उसको फल मिलता है, और वह सभी दृष्टियों से पूर्ण सिद्धि प्राप्त कर लेता है।

इस तंत्र में बताया गया है, कि ब्राह्मण को इस साधना में एक लाख जप करना चाहिए, क्षत्रीय को चार लाख, वैश्य को बारह लाख और शूद्र को सोलह लाख मंत्र जप करना चाहिए।

साधना कैसे करें

भगवान शिव ने इस साधना प्रयोग को समझाते हुए बताया है कि साधक प्रातः काल स्नान कर पूर्ण विधि विधान के साथ संध्या करे और गायत्री मंत्र का जप करे.

जप के बाद वह साधक भगवान सूर्य को जल से अर्घ्य दे, और लाल वस्त्र धारण कर कोमल आसन पर बैठ जाय और प्राणायाम करे।

इसके बाद अपने सामने पूज्य गुरूदेव का सुन्दर चित्र स्थापित कर दे यदि उनकी मूर्ति हो तो, मूर्ति स्थापित करे, ज्यादा अच्छा यह हो कि उन्हें अर्थात् गुरू को स्वयं को बुला कर उनका आसन पर विधिवत पूजन करे। तत्पश्चात मंत्र जप करे।

भगवान शिव ने स्पष्ट करते हुए कहा है कि गुरू जो मंत्र दे उसी को "गुरू मंत्र" कहा जाता है, और पूर्ण श्रद्धा युक्त एक लाख गुरू मंत्र जाप करे। साथ ही साथ पांचों अंगों के साथ पुरश्चरण करे। ये पांच अंग है- (१) होम, (२) तर्पण (३) अभिषेक (४) अपने कुल के विप्र को भोजन और (५) गुरू को दक्षिणा। ये पांचों पंचांग कहलाते है, और इनके साथ ही पुरश्चरण करते हुए मंत्र जाप करना चाहिए।

> अनेन क्रम मार्गेण पुरश्चर्या समापयेत्।
> ततः सिद्धो भवेद् देवि नान्यथा मम भाषितम्।।

भगवान शिव कहते है कि है, देवी पार्वती! इस क्रम से यह पुरश्चरण प्रयोग सम्पन्न करना चाहिए और ऐसा करने वह साधक स्वयं ही पूर्ण सिद्ध बन जाता है, और आगे की प्रत्येक साधना में पूर्ण सफलता प्राप्त करता है।

गुरु मंत्र

ॐ परमतत्वाय नारायणाय गुरूभ्यो नमः

उपरोक्त गुरू मंत्र है, जो कि शिष्य के लिए तो "मंत्र राज" कहा गया है, मगर इसके साथ हो साथ साधक को कुछ और जानकारियां भी प्राप्त कर लेनी चाहिए जो कि अत्यन्त गोपनीय है।

भगवान शिव पार्वती को पुरश्चरण पद्धति समझाते हुए कहते है कि-

> प्रणव त्रयमुद्धृत्य माया बीजं समुद्धरेत्।
> ततः प्रणवमुद्धृत्य एवमेतत् सु-दुर्लभम्।।४।।
> एतां सप्ताक्षरीं विद्यां प्रजप्य दशधा प्रिये।।
> यः पश्येद् ग्रहण देवि। प्रायश्चित्तं न विद्यते।।५।।
> (पु० रहो० तंत्र ३/४-५)

अर्थात् सर्वप्रथम तीन प्रणव का उद्धार कर माया बीज को स्पष्ट करे और पुनः तीन प्रणव स्पष्ट करे जिसे कि अत्यन्त गोपनीय और दुर्लभ मन्त्र कहा गया है यह सप्ताक्षरी मन्त्र गुरू मन्त्र से पहले तीन माला नित्य मन्त्र जाप करना चाहिए। यह इस प्रकार से मंत्र बनता है—

ॐ ॐ ॐ ह्रीं ॐ ॐ ॐ

इसे "सिद्ध विद्या मंत्र" भी कहा गया गया है, यदि साधक गृहस्थ हो और जीवन में सम्पूर्ण भोगों का भोग करना चाहता हो तो अत्यन्त परम "दुर्लभ भोग मन्त्र" भी स्पष्ट करना चाहिए। मेरी राय में साधकों को सबसे पहले उपरोक्त सप्ताक्षरी मन्त्र की तीन माला मन्त्र जप करना चाहिए फिर मूल गुरू मन्त्र का यथा संभव मन्त्र जप करे क्यों कि मूल मन्त्र का कुल एक लाख मन्त्र जप करना है जो कि साधक पांच, सात या नौ दिन में संपन्न करे, परन्तु प्रत्येक दिन गुरू पूजन कर पहले सप्ताक्षरी मंत्र की तीन माला मंत्र जप करे, फिर मूल गुरू मंत्र करे और उसके बाद निम्न "भोग मंत्र" का जप तीन माला मंत्र जप करे।

ऐश्वर्य मंत्र

ह्रीं ह्रीं ह्रीं ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं

इस प्रकार यह मंत्र जप सम्पन्न होता है, भगवान शिव कहते है, कि ये दोनों ही मंत्र दिखने में सामान्य प्रतीत होते है, परन्तु यदि इन मंत्रों को सही ढंग से जपा

जाय तो वह सभी दृष्टियों से पूर्ण सफलता प्राप्त करता है।

> बहु-भाग्येन चार्वांगि लौकेर्भारतवासिभिः
> प्राप्ति मात्रेण अप्तव्य तत् सर्वक्षय भवेत्

अर्थात् हे, पार्वती भारतवासियों के लिए इससे ज्यादा श्रेष्ठ और दुर्लभ मंत्र नहीं है, इसको जपने पर समस्त प्रकार के दोष क्षय होते है और उसका सभी दृष्टियों से पूर्ण भाग्योदय होता है।

पुरश्चरण यंत्र

भगवान शिव कहते है, कि जब इस प्रकार से मंत्र जप पूरा हो जाय तब पहले से ही प्राप्त सिद्ध दुर्लभ सूर्य के समान तेजस्वी पुरश्चरण यंत्र जो कि सामने पात्र में गुरू के सामने रखा हुआ होता है, उसका संक्षिप्त पूजन करे और उसे धारण कर लें। ऐसा करने पर उसके जीवन में सभी दृष्टियों से पूर्णता सफलता, और श्रेष्ठता प्राप्त होने लगती है, उसके पिछले जीवन के और इस जीवन के समस्त पाप दोष समाप्त हो जाते है और पूर्ण रूप से वह अपने पूज्य गुरूदेव को प्राप्त करता हुआ उसमें लीन हो जाता है।

> यत् यत् कर्म कृतं देवि पुरश्चरणमुत्तमम्
> तत् सर्वं नाशमायाति मम तुल्यो भवेत् यदि ।।

अर्थात् इस प्रकार से परम दुर्लभ पुरश्चरण यंत्र (न्यौछावर ६०)रू. को पहले से ही प्राप्त कर साधक को पूजन कर धारण कर लेना चाहिए तो उसके पाप और दोष नाश हो जाते है और भगवान शिव कहते है कि वह साधक मेरे समान हो जाता हैं।

> सपत्नीक गुरूं देवं पूजयेद यस्तु साधकः
> अनेन विधिना देवि सपूज्य गुरु देवतम्
> भावयेच्च सपत्नीकं पूजयेद् गुरुमाज्ञया
> सदैव सहसा सिद्धिर्जायते वीर-वन्दिते

इस प्रकार संभव हो तो गुरू पत्नी के साथ गुरू का पूर्ण रूप से पूजन करे, उनकी आज्ञा पालन करे तो निश्चय ही वह पूर्ण सिद्धि प्राप्त करता है।

इस साधना में पुरश्चरण माला का ही प्रयोग किया जाना चाहिए, यह माला विचित्र और विविध मनकों से गुंथी हुई होत है, तथा इसका प्रत्येक मनका पुरश्चरण मत्र से सिद्ध और प्रामाणिक होता है, इस प्रकार की दुर्लभ माला पर व्यय मात्र ६० रू. आता है।

साधना काल में तो इस माला का प्रयोग किया जाना ही चाहिए, साधना के बाद इस माला को यदि हम पहिने रहे, तो वह जीवन का सौभाग्य ही होगा क्योंकि इससे दैनिक होने वाले दोष और पाप स्वतः ही समाप्त होते रहेगे, और साधक का चित्त निर्मल और दिव्य बना रहेगा।

उच्चकोटि के जो सन्यासी और योगी होते है, जो अपने आप में श्रेष्ठ साधक होते है, वे इस पुरश्चरण माला को हर हालत में प्राप्त कर इसके माध्यम से पुरश्चरण प्रयोग तो सम्पन्न करते ही है, नित्य एक या दो घण्टों के लिए इस माला को धारण भी करते है जिससे कि पिछले दिन या उस दिन किये गये सभी दोष समाप्त हो जाते है और वह साधक निर्मल और दिव्य बना रहता है।

वास्तव में ही यह पुरश्चरण प्रयोग अपने आप में अत्यन्त ही महत्वपूर्ण और दुर्लभ प्रयोग है, साधकों को चाहिए कि वे इस साधना को अवश्य ही सम्पन्न करे, जिससे कि वे अपने जीवन में सभी दृष्टियों से पूर्ण सिद्धि प्राप्त कर सके।

गुरूदेव

यह सब क्या दिख रहा है ?

भगवान ने मनुष्य के शरीर में अनन्त संभावनाए भर दी है यह अलग बात हैं कि हम अभी तक शरीर के भौतिक पक्ष को ही जान सके है। शरीर का एक बहुत महत्वपूर्ण भाग उसका आध्यात्मिक पक्ष है, जिसमें संवेग मन, प्राण, आत्मा और चैतन्य तंत्र है, उसको हम भली प्रकार से नहीं जान सके है, और जब तक हम उसको नहीं जान सकेंगे, तब तक हम अपने आपको पहिचान भी नहीं सकेंगे।

विज्ञान ने अब तक जो कुछ अध्ययन किया है, और शरीर शास्त्रियों ने अब तक जो पहिचाना है, वह शरीर का बाहरी रूप है, इसके अन्तर्गत उन्होंने त्वचा, हाथ पैर मांस रक्त प्रवाह और हृदय आदि का अध्ययन तो किया है, अंगों को काट कर और उसका आपरेशन करने की विधि भी ज्ञात की है, परन्तु इस शरीर के अन्दर जो चैतन्यता है, इस शरीर के अन्दर जो ग्रन्थियां है, जो संवेग है, जो भावनाएं और विचार है, जो इसका आध्यात्मिक पक्ष है, उसे विज्ञान न तो समझ पाया है, और न समझ सकेगा। मनुष्य हाड़ मांस के ढ़ांचे को ही नहीं कहते, प्राण निकल जाने के बाद भी हाड़ मांस का ढांचा तो रहता ही है, परन्तु वह व्यर्थ होता है जब तक कि उसमें प्राण तत्व नहीं हो, इससे यह स्पष्ट हुआ कि जीवन में प्राण तत्व ही ज्यादा महत्वपूर्ण और मानव जीवन का आधार है, इसको दूसरे शब्दों में "आत्म तत्व" भी कहते है।

यह आत्म तत्व है क्या ?

हमारे दर्शन में स्पष्ट रूप से बताया गया है, कि प्रत्येक मानव शरीर में एक आत्मा विद्यमान है, जो कि मरती नहीं, जो अजर अमर शुद्ध सात्विक और निर्मल है। इसके माध्यम से ही सारा जीवन संचालित होता है।

जिस प्रकार हम अपने शरीर पर वस्त्र धारण करते है, और जब वस्त्र घिस जाते है, या फट जाते है, अथवा कमजोर हो जाते है, तब हम उन वस्त्रों को फेक कर नये वस्त्र धारण कर लेते है पर वस्त्र बदल देने से शरीर नहीं बदलता, ठीक इसी प्रकार जब शरीर घिस जाता है, फट जाता है, दुर्बल और कमजोर हो जाता है, तो आत्मा उस शरीर को फेक देती है और

नया शरीर धारण कर लेती है, जिसे जन्म कहा जाता है पर इससे या देह को बदल देने से आत्मा नहीं बदलती, आत्मा तो वही शाश्वत रहती है, और जीवन के संबंध आत्मा के माध्यम से ही संचालित होते है।

अब तो विज्ञान भी यह मानने लगा है कि हमारे अधिकतर संबंध देहगत संबंध होते है। पति या पत्नी का पारस्परिक संबंध समाज ने निर्मित किया है, और उन दोनों को यज्ञ वेदी पर बिठा कर सात फेरे फिरा कर पति पत्नी मान लिया है, परन्तु इससे क्या आत्मगत संबंध संभव है?

आज के युग में तो देख भाल कर पति या पत्नी का संबंध स्थापित होता है, विवाह से पूर्व पति पत्नी आपस में एक दूसरे को देखते है, बातचीत करते है, और उसके बाद उनका विवाह होता है, कई लोग तो साल भर परस्पर प्यार भी करते है, और उसके बाद ही विवाह संबंध में जुड़ते है, इसके बावजूद भी विवाह के एक दो साल बाद ही परस्पर लड़ाई झगड़े मारपीट वाद विवाद और तनाव शुरू हो जाता है। यह सब क्या है, इतना देखने और समझने के बाद भी परस्पर क्यों लड़ाई होती है, इसका मूल कारण उन दोनों का मात्र देह संबंध ही था, आत्मागत संबंध नहीं होने की वजह से उन दोनों में वह सामीप्यता वह प्रगाढ़ता और वह मधुरता व्याप्त नहीं हो पाई, जो कि होनी चाहिए थी, जब उनकी शारीरिक भूख या शारीरिक आकर्षण समाप्त होता है तो परस्पर लड़ाई झगडे मतभेद शुरू हो जाते है।

इसके बावजूद भी पति या पत्नी में से किसी अन्य से कुछ क्षणों का सम्पर्क होता है, और वह जीवन भर के लिए संबंध बन जाता है। यह अलग बात है कि समाज इस प्रकार के संबंधों को मान्यता नहीं देता, यह अलग बात है, कि उन दोनों में परस्पर शारीरिक संबंध नहीं बन पाते, परन्तु इसके बावजूद भी उन दोनों में परस्पर चाहत बनी रहती है, एक दूसरे को प्राप्त करने की इच्छा बनी रहती है, एक दूसरे के सुख दुख में तड़फते है, प्रसन्न होते है, सहयोग देते है, और सर्वस्व न्यौछावर कर देते है।

यह क्या है? जब कि उन दोनों का परस्पर कोई स्वार्थ नहीं होता, किसी प्रकार का लेन देन नहीं होता, किसी प्रकार का शारीरिक सुख या भोग के प्रति आकर्षण नहीं होता, फिर भी बिना एक दूसरे को देखे, मन में तड़फ और बेचैनी बनी रहती हैं, हर क्षण मन में यह भावना रहती है, कि मैं उस दूसरे पक्ष को ज्यादा से ज्यादा सुख, ज्यादा से ज्यादा सहयोग दूं, ज्यादा से ज्यादा तृप्ति प्रदान करूं। ये संबंध, यह चाहना, आत्मा की चाहत है, यह संबंध शारीरिक सुख या देह पर आश्रित नहीं है, अपितु आत्मा पर आधारित है, और जो संबंध आत्मा पर आधारित है, वे ही संबंध ज्यादा महत्वपूर्ण, ज्यादा पूर्ण और ज्यादा तृप्ति दायक होते है।

यह अलग बात है, कि आज के युग में ये संबंध समाज की दृष्टि से सही नहीं हैं, परन्तु समाज तो हमने बनाया है, समाज के नियम तो समय समय पर बदलते रहे है, द्वापर युग में किसी राज्य की कन्या को हरण करके अपने घर ले आना, वीरता कहलाती थी, भगवान श्री कृष्ण ने रुक्मिणी का इसी प्रकार से हरण किया था, और समाज ने उन्हें वीर माना था, परन्तु आज के युग में यदि इस प्रकार किसी का हरण कर लिया जाय तो वह अपराध है। समाज तो उस समय भी था, और आज भी है, परन्तु उस समय समाज की मान्यताएं दूसरी थी और आज समाज की मान्यताएं दूसरी है, इसीलिए, कल जो काम न्यायोचित और वीरता योग्य मानाजाता था वह आज निन्दनीय तथा अपराधयुक्त माना जाता है।

पर यह बात भी सत्य है, कि समाज बाहरी देह पर नियम लागू कर सकता है, वह किसी आत्मा या किसी की भावनाओं पर दबाव नहीं डाल सकता, इसलिये जब पिछले जीवन के पति या पिछले जीवन की पत्नी से आमना-सामना हो जाता है, तो एकाएक उसके प्रति आकर्षण

बढ़ जाता है एकाएक उसके प्रति रुचि जाग्रत होने लगती है, और ऐसा लगता है कि जैसे कई कई वर्षो के परिचित हो, भले ही समाज उनको पति पत्नी की मान्यता न दे, परन्तु आत्मा के संबंध होने की वजह से एक दूसरे के प्रति चाहत और जो आकर्षण होता है, उसमें न्यूनता नहीं आ पाती और जब तक आत्मा का आत्मा से पूर्ण मिलन नहीं हो जाता, तब तक जीवन में तृप्ति और पूर्णता अनुभव ही नहीं हो सकती।

अभी पिछले दिनों अहमदाबाद में दो सहेलियों ने परस्पर विवाह कर लिया, उसमें से एक सहेली ने आपरेशन करा कर अपने आपको पुरुष रूप में परिवर्तित कर लिया, यह क्या है, क्या उनको अन्य पुरुष या पति मिल नहीं पा रहे थे यह बात नहीं है, बात तो आत्मा के संबंधों की है, पिछले जीवन में वे दोनों अवश्य ही पति पत्नी रहे होंगे, इस जीवन में भले ही उन्होंने अलग अलग देह धारण कर ली हो परन्तु जब आत्मा की टकराहट होती है, तब परस्पर आवाज सुनाई देती है, और वे दोनो एक दूसरे में लीन हो जाते है।

पूरे विश्व का इतिहास इस प्रकार की घटनाओं से भरा हुआ है, इंग्लैण्ड के कई राजाओं ने अपने से कम स्तर की महिलाओं से विवाह करने के लिए राज्य तक को त्याग दिया, जब कि उन्हें राज्य कुल की अच्छी से अच्छी स्त्री मिल सकती थी, परन्तु यह तभी तक चल सकता जब तक उस आत्मा से परिचय न हो जायें, जिस आत्मा से पिछले जीवन से विवाह किया था, या पारस्परिक संबंध बने थे, उस समय तक भले ही किसी अन्य देह से विवाह हो जाय, परन्तु ऐसा विवाह स्थायी नहीं होता, उसमें टकराहट बनी रहती है, परस्पर मतभेद और लड़ाई झगडे चलते रहते है, इस अवधि में उनके संतान ही जाती है, वे भले ही कर्त्तव्य की डोर से बंधे हुए रहे, कर्तव्य की वजह से या सामाजिक भय से एक दूसरे के सुख दुख में भाग लें परन्तु ज्यों ही उसका पूर्व जीवन की आत्मा से संबंध या परिचय स्थापित होता है, त्यों ही उनके मन में उमंग और उत्साह आ जाता है, एक दूसरे के प्रति चाहत और सामीप्यता अनुभव होने लग जाती है. और ऐसे संबंध न समाज मिटा सकता है, न कानून व्यवधान डाल सकता है और न समय का प्रवाह उन संबंधों को कमजोर कर सकता है।

यही स्थिति जान पहिचान के क्षेत्र में होती है, हम कई बार अपने सगे भाई की अपेक्षा किसी अन्य के प्रति ज्यादा विश्वास करते है, उस पर ज्यादा भरोसा करते है, उसके साथ घूमने फिरने में अधिक आनन्द आता है; उन दोनों के मन में एक दूसरे के प्रति आदर और सम्मान नहीं रहता, यह सब देहगत संबंध के ही परिचायक है। और यहां पर हमारा दर्शन बिलकुल स्पष्ट कहता है कि चाहे पुत्र पत्नी पति या भाई हो, देहगत संबंध विश्वास-हीन और आकर्षण हीन होते है जबकि आत्मगत संबंध ज्यादा महत्वपूर्ण दिव्य और विश्वास युक्त होते है।

आत्मगत संबंध कैसे पहिचाने ?

जैसा कि मैंने बताया कि हमें यह पता ही नहीं होता कि पिछले जीवन में हमारी पत्नी कौन थी, या पति कौन था, हमारे पुत्र या पिता कौन थे, और जब तक यह मालूम नहीं होता, तब तक हम अन्धेरे में ही भटक सकते हैं, हमें यह भी पता नहीं होता कि उन्होंने कहां जन्म लिया है, किस अवस्था में और उनको किस प्रकार खोज सकते है।

और जीवन का सार यही है, कि जब तक हम उन्हें खोज नहीं लेते, तब तक यह जीवान व्यर्थ है। क्योंकि हम केवल देहगत संबंध के आधार पर चलते रहते है। हमारे मन में कोई आकर्षण नहीं रहता, केवल कर्तव्य की डोर से बंधे हुए कठपुतलियों की तरह कार्य करते रहते है, और कई बार तो पूरा जीवन ही बीत जाता है, और पिछले जीवन के संबंधों को न तो पहिचान पाते है और न मिल पाते है।

कुछ सौभाग्यशाली ऐसे होते हैं, जिनको जीवन में जल्दी ही ऐसे लोग अचानक मिल जाते है, जिनके संबंध

पिछले जीवन में आत्मगत थे, उनको देखते ही हृदय में एक हिलोर सी अनुभव होने लगती है, उनसे मिलने के लिए उनसे बातचीत करने के लिए एक तड़फ, एक बेचैनी अनुभव होने लगती है. और जब हम उनसे बात करते है, जब हम उनके समीप बैठते है. तो इच्छा होती है कि हम उसके पास बैठे ही रहे. उनसे बातचीत करते ही रहें। पर कई बार सामाजिक बन्धन व्यवधान डाल देते है।

परन्तु क्या समाज बाधाएं डाल सकता है, जो मर्द होते हैं, जो साहसी होते है जो दृढ निश्चयी होते है वे बन्धनों की परवाह नहीं करते, वे घुट कर नहीं रह सकते, वे कोई न कोई रास्ता निकाल ही लेते है और अपने पूर्व जन्म की आत्मा को ढूंढ कर उसमें लीन हो ही जाते है।

क्या सामाजिक दृष्टि से यह उचित है, और मैं कहता हूं कि समाज केवल देहगत संबंधों की व्याख्या कर सकता है, वह देहगत संबंधों पर अंकुश लगा सकता है, नियम बना सकता है, व्यवस्थाएं दे सकता है. आत्मा पर इस समाज का कोई अधिकार नहीं होता, आत्मा के ऊपर कोई नियम, कोई कानून लागू नहीं होता, और मनुष्य की हिम्मत इन समाज के नियमों से ऊपर होती हैं और वह पूर्व जन्म की आत्मा से पुनः संबंध स्थापित कर अपने जीवन को पूर्णता प्रदान कर लेते है।

पहिचान इन आत्मगत संबंधों की

भारतीय दर्शन और भारतीय तंत्र में इसके लिए भी हमारे हाथ कुंजी दी है, जिसके माध्यम से हम पिछले जीवन की आत्मा को ढूंढ सके, पहिचान सके, और उनसे संबंध स्थापित कर सके, माण्डुक्योपनिषद में स्पष्ट रूप से बताया है कि विशिष्ट आत्म साधना के द्वारा पिछले जीवन की पत्नि पति, भाई या अन्य संबंधों को पहिचाना जा सकता है, और उससे सम्पर्क स्थापित किया जा सकता है, इस साधना को "आत्म साधना" कहा गया है।

इसके लिए साधक किसी भी गुरूवार से यह साधना प्रारम्भ कर सकता है, यह आठ दिन की साधना है, और एक बार में केवल दो या तीन घण्टे इस साधना में देने पड़ते है। यह साधना दिन की साधना है और साधक चाहे तो रात्रि को भी यह साधना सम्पन्न कर सकता है. इसके लिए शान्त वातावरण, होना आवश्यक है, अंतः जो भी पुरूष या स्त्री इस साधना को करना चाहे, वह घर के एकान्त कमरे में यह साधना प्रारम्भ कर सकते है, इसके लिए या तो ठीक दोपहर को यह साधना प्रारम्भ करे, जिससे कि घर में शोर गुल न हो, या रात्रि को जब घर के सभी सदस्य सो जांय, तब आधी रात को साधना प्रारम्भ करें। एक बार में साधक केवल एक घण्टें या दो घण्टे ही बैठ कर साधना करे। माण्डुक्योपनिषद में तो कहा है कि साधक को एक दिन में एक घण्टे से ज्यादा साधना करने की जरूरत नहीं है, इस प्रकार गुरूवार से प्रारम्भ कर अगले गुरूवार को इस साधना का समापन कर दें।

साधना काल में साधक को चाहिये कि कमरे में इत्र या गुलाब जल छिड़क दे, जिससे कि वातावरण सुगन्धित हो सके, उसे सुगन्धित अगरबत्ती भी लगानी चाहिए और सफेद आसन पर सफेद धोती या सफेद साड़ी पहिन कर उत्तर दिशा की ओर मुंह कर बैठ जांय।

सामने आत्म यंत्र (न्यौछावर १५०)रु, को थाली में स्थापित करें दे और उसकी संक्षिप्त पूजा करे फिर शुद्ध घृत का दीपक लगा दे, और स्फटिक माला से निम्न आत्म मंत्र का ४५ मिनट तक जप करे।

आत्म मंत्र

ॐ ऐं ऐं श्रीं श्रीं आत्म्यै ऐं ऐं फट्

इसके बाद माला नीचे रख कर दीपक की लौ में एकटक देखते रहने की क्रिया करे। ऐसे समय में विविध तरह के दृश्य पिछले जीवन की घटनाएं आंखों के सामने स्पष्ट होगी और उसके सामने पिछले जीवन की पत्नी,

(शेष पृष्ठ २१ पर)

इतिहास का एक अन्धेरा पृष्ठ

प्रभो ! अब और कोई पादपद्म पैदा मत करना

--योगेन्द्र निर्मोही

भगवत्पाद शंकराचार्य साक्षात् भगवान शिव के अंशभूत अवतार थे, छोटी सी उम्र में ही उन्होंने सन्यास लेकर एक नवीन मार्ग का सृजन किया था, उन्होंने अपने जीवन में यह दृढ निश्चय कर लिया था, कि मैं भारतवर्ष को पूर्ण आध्यात्मिक बनाने में अपना जीवन लगा दूंगा और उसके लिए चाहे मुझे कितनी ही यातनाएं भोगनी पडे, कितने ही कष्ट उठाने पडे न तो मैं अपने पथ से विचलित होऊंगा और न अपने उद्देश्य को पूरा करने से पहले मृत्यु को प्राप्त होऊंगा।

परन्तु उस समय पूरा भारतवर्ष बौद्ध धर्म से आक्रांत था, सबसे बड़ी बात यह थी कि बौद्ध धर्म राजाओं महाराजाओं और सम्राटों का धर्म बन गया था, और उस समय की परम्परा के अनुसार जिस राज्य का राजा जिस धर्म में दीक्षित हो, सारी प्रजा भी उसी धर्म में दीक्षित हो जाती थी। सम्राट अशोक, समुद्र गुप्त, चन्द्रगुप्त आदि कई राजाओं ने बौद्ध धर्म को स्वीकार कर लिया था, यही नहीं, अपितु इस धर्म के प्रचार प्रसार के लिए अपने राजकोष के द्वार पूरी तरह से खोल दिये थे।

ऐसी भीषण परिस्थिति में शंकराचार्य एक अकेले व्यक्ति थे, जिन्हें सिद्धाश्रम से भेजकर कहा गया था कि भारतवर्ष में तुम्हें जन्म लेकर अपने जीवन काल में बौद्ध धर्म का समूल विच्छेदन कर पुनः सनातन धर्म को स्थापित करना है। जब योगीराज हिरण्यगर्भ को सिद्धाश्रम से आदेश हुआ, कि तुम्हें भविष्य में शंकराचार्य के नाम से ही देश और विदेश में तथा सिद्धाश्रम में जाना जायेगा, तुम्हें दक्षिण में जन्म लेकर उत्तर भारत में पहुंचना है, और सनातन धर्म को पूर्णता के साथ स्थापित करना है, और इसके लिए तुम्हें ज्यादा कष्ट, बाधाएं, अड़चने और परेशानियां आयेगी परन्तु जीवन का उद्देश्य ही जब लक्ष्य को प्राप्त करना होता है, तब ये सब बाधाएं गौण हो जाती है।

महा योगीराज हिरण्य गर्भ दक्षिण में एक कुलीन वंश में जन्म लेकर "शंकर" के नाम से प्रचलित हु...

छोटी सी उम्र में ही उन्होंने अपनी मां को स्पष्ट रूप से बता दिया कि मैं एक विशेष उद्देश्य से इस संसार में आया हूं और मैं उस उद्देश्य की पूर्ति के लिए सन्यास लेना चाहता हूं क्योंकि बिना सन्यास लिये ज्ञान की पूर्णता संभव नहीं है, तथा सफल और श्रेष्ठ गृहस्थ जीवन के लिए भी प्रारम्भिक मार्ग सन्यास के द्वारा ही जाता है।

मां ने अत्यन्त अनुनय विनय किया, उसका ममत्व शंकर का विवाह कर देने का था, परन्तु जो व्यक्ति, विशेष उद्देश्य के लिए जन्म लेते है, वे न तो मां बाप के ममत्व की चिन्ता करते हैं और न पत्नी अथवा बंधु बांधवों का स्नेह ही उनके पैरों में बेड़ियां डाल सकता है, अन्ततः शंकर घर से निकल कर सन्यास धर्म में दीक्षित हो गये।

एक छोटा सा बालक जिन बाधाओं और कठिनाइयों को पार करता हुआ हिमालय में विचरण कर रहा था, जिस तरीके से उसने भूख–प्यास, सर्दी गर्मी अपने शरीर पर झेली, अलग अलग स्थानों पर अलग–अलग केन्द्र स्थापित किये, वह स्तुत्य है, शंकराचार्य ने यह भली भांति सोच लिया था कि मुझे सबसे बड़ी बाधा अपने पण्डितों से और बुद्ध धर्म में दीक्षित सम्राटों से आयेगी और हुआ भी यही, बुद्ध धर्म में दीक्षित सम्राटों ने अपने राज्य में उन्हें घुसने से मना करवा दिया उन पर प्राण घातक हमले करवाये गये परन्तु कठोर व्यक्तित्व के धनी, इस प्रकार की बाधाओं से विचलित नहीं हो सकते, वे अपने जीवन में जो लक्ष्य लेकर आते है, उस लक्ष्य की पूर्ति में बाधाएं और अड़चनें उनका जोश ही बढ़ाते है।

इससे भी ज्यादा परेशानी उन्हें कट्टर पंथियों और पंडितों से आई, वे इस बात को स्वीकार करने को तैयार ही नहीं थे, कि दक्षिण का एक बालक उन्हें शास्त्रार्थ में पराजित कर दे, उनके ज्ञान को कोई ललकारे, कोई उन्हें चुनौती दे, यह उन्हें स्वीकार नहीं था, परन्तु शंकराचार्य तो स्वयं एक अलग ही मिट्टी के बने हुए थे, उन्होंने पग पग पर उन विद्वानों और तथाकथित पण्डितों को शास्त्रार्थ के लिए ललकारा और उनके ही ग्रन्थो से प्रमाण देकर उन्हें पराजित किया और सनातन धर्म की महत्ता सिद्ध की।

यही नहीं अपितु उन्होंने बौद्ध धर्म के पण्डितों को भी खुले आम चुनौती दी, उन्होंने उन्हें शास्त्रार्थ में बुलाया और इस बात को स्पष्ट किया कि बौद्ध धर्म की अपेक्षा सनातन धर्म ज्यादा प्राचीन, ज्यादा महत्वपूर्ण और मानव मात्र के लिए ज्यादा उपयोगी है। एक एक कर बौद्ध धर्म के दिग्गज पराजित होते गये, एक एक कर सम्राट सनातन धर्म को स्वीकार करते गये, और धीरे धीरे भारतवर्ष में भगवान शंकराचार्य के प्रयत्नों से सनातन धर्म का विस्तार होता गया।

यज्ञ ही आधार

पर शंकराचार्य इस बात को अनुभव कर रहे थे, कि बिना यज्ञों के जन चेतना फैलाई नहीं जा सकती, जन जन में प्रवेश करने के लिए यज्ञ सबसे महत्वपूर्ण आधार है। सिद्धाश्रम की स्थापना करने के साथ साथ उन्होने सनातन धर्म को स्थापित कर यज्ञों की महत्ता पर बल दिया और भारतवर्ष में घूम घूम कर स्थान स्थान पर यज्ञों की परिपाटी प्रारम्भ की।

भगवान शंकराचार्य ने ही शत कुण्डी और सहस्र कुण्डी यज्ञों का विधान जन साधारण के सामने रखा, उन्होंने बताया कि जीवन की पूर्णता यज्ञों के द्वारा संभव है। उन्होंने यज्ञ के माध्यम से समाज की समस्याओं को, जन साधारण की परेशानियों को दूर करने का प्रयत्न किया, उनके शिष्यों ने स्थान स्थान पर यज्ञ आयोजित किये, और शंकराचार्य निश्छल भाव से पैदल यात्राएं कर उन यज्ञों में पहुंचते, जन साधारण के सामने अपना प्रवचन स्थापित करते, **जिनमें तीन बातो पर विशेष बल रहता प्रथम तो यह कि सिद्धाश्रम आध्यात्मिक चेतना**

का श्रेष्ठतम केन्द्र है और सिद्धाश्रम में स देह पहुंचना ही जीवन की पूर्णता हैं दूसरा उन्होने सनातन धर्म को संसार के सभी धर्मों से श्रेष्ठतम बताया और कहा कि इस धर्म से ही जीवन की पूर्णता और श्रेष्ठता संभव है। तीसरे उन्होने यज्ञ और साधनाओं की महत्ता पर बल देकर जन साधारण को यज्ञ में भाग लेने के लिए प्रेरित किया और उन्हे बताया कि गृहस्थ जीवन में पूर्णता साधनाओं के माध्यम से ही संभव है। साधनाओं के द्वारा जीवन में एकाग्रता संयम और श्रेष्ठता आ सकती है। साधनाओं के द्वारा ही मनुष्य का संबंध देवताओं से स्थापित होता है, जिसके द्वारा वे अपने जीवन में प्रत्येक कार्य में पूर्णता और सफलता प्राप्त कर पाते है।

भगवान शंकराचार्य ने एक स्थान पर अपनी व्यथा को स्पष्ट करते हुए लिखा हैं कि इन यज्ञों और शिविरों में भाग लेने वाले साधकों का मन स्वयं ही संयमित नहीं है वे स्वयं अधूरे से है, और इसी वजह से उनको साधनाओं में सिद्धि या सफलता नहीं मिल पाती, परन्तु वे जब अपनी कमजोरियों को मुझ पर डालते है, या सनातन धर्म के नियमों की अवज्ञा करते है, या जब वे मंत्रों के प्रति अनास्था प्रदर्शित करते है, तो मुझे सबसे ज्यादा वेदना और दुःख अनुभव होता है।

मैं स्वयं उनके सामने एक प्रत्यक्ष उदाहरण हूं, कि साधनाओं को मैंने साधा है, सिद्धियां प्राप्त की है, सफलता अर्जित की है, और जब मैं स्वयं इन मंत्रों और साधनाओं से सिद्धि प्राप्त कर सकता हूं तो फिर ये भी कर सकते है, परन्तु उनके अन्दर अहं है उनका घमण्ड उन्हें बार बार गलत मोड़ पर प्रेरित करता है, और इसीलिए वे दिग्भ्रमित है, इसीलिए उन्हें साधनाओं में सफलता नहीं मिल पाती।

आगे शंकराचार्य ने आशा प्रगट करते हुए, कहा है, कि फिर भी मुझे इन सभी साधकों पर विश्वास है, कि ये अवश्य ही अपने जीवन में सफलता प्राप्त कर सकेगे क्योंकि इनमें से कुछ साधकों के मन में लगन है, कार्य करने की क्षमता है, और आगे बढ़ने की भावना है। इसलिए ये अवश्य ही सफल हो सकेंगे और इनमें से यदि मुट्ठी भर साधक भी सिद्धाश्रम में पहुंच सके, और उस स्तर के बन सके, तो मैं अपना सौभाग्य समझूंगा।

शिष्य परम्परा

शुरू शुरू में शंकराचार्य ने अधिक से अधिक शिष्यों को सामान्य दीक्षा देना प्रारम्भ किया, इसके पीछे उनकी भावना यह थी, कि ये शिष्य दीपक का कार्य करेंगे और इस घोर अन्धकार में अपनी क्षमता के अनुसार रोशनी बिखेरेंगे, हो सकता है, इनमें से कुछ शिष्य सामान्य निकले परन्तु भीड़ में ऐसा खतरा तो उठाना ही पड़ता है परन्तु कुछ वर्षों बाद उन्होंने सैकड़ों हजारों शिष्यों में से केवल बारह शिष्यों को ही प्रधानता दी, इनमें से भी छः गृहस्थ शिष्य थे, और छः सन्यासी शिष्य थे। गृहस्थ शिष्यों में मण्डन मिश्र और पादपद्म ज्यादा मेधावी व्यक्तित्व थे, जिन्होने भगवान शंकर के शास्त्रार्थ से पराजित हो कर गृहस्थ जीवन छोड़कर उनके शिष्य बने थे, और छाया की तरह उनके साथ ही रहे थे।

जब पानी पर कमल खिले

भगवत् पाद शंकराचार्य अत्यन्त ही सरल और सात्विक प्रवृत्ति के व्यक्तित्व थे, उनमें छल, कपट, झूठ, आदि का चिन्तन नहीं था, उन्हे पादपद्म ज्यादा अनुकूल शिष्य प्रतीत हुआ, और शंकराचार्य ने उसे उच्च कोटि की साधनाएं सिखानी प्रारम्भ की। पादपद्म की रुचि तंत्र के क्षेत्र में विशेष थी, और वे पूरे भारतवर्ष में एक सफल तांत्रिक, एक सफल योगी और एक सफल सिद्ध बनना चाहते थे। शंकराचार्य भी उन्हें इसी दिशा में प्रेरित कर रहे थे, उन्हें भरोसा था कि मेरे महाप्रयाण के बाद यह शिष्य मेरे कार्य को संभाल सकेगा, सिद्धाश्रम की परम्परा और गरिमा को जीवित रख सकेगा और मैं इसके ज्ञान, इसकी संगठन शक्ति और

इसकी उन्नति से प्रसन्न हो कर निश्चिन्तता के साथ पुनः सिद्धाश्रम जा सकूंगा।

और धीरे धीरे पादपद्म साधना के क्षेत्र में आगे बढ़ता गया, अन्य सभी शिष्य उसे सम्मान देने लगे, जो प्रमुख बारह शिष्य थे, उनको भी यह आभास होने लगा कि पादपद्म गुरू के सर्वाधिक प्रिय शिष्य है और जिस तेजी के साथ गुरू उन्हें साधना के क्षेत्र में आगे बढा रहे है, उससे ऐसा लग रहा है कि गुरू के बाद वे ही इस परम्परा को अग्रसर करने में प्रमुख व्यक्तित्व बन सकेगे।

और पादपद्म भी इस बात को अहसास कर रहा था, वह छोटी मोटी साधनाएं सीख रहा था, और गुरू की कृपा और साधना के बल पर उसने जल पर चलने की क्रिया और सिद्धि प्राप्त कर ली थी, जब वह पानी पर चलता, तो ज्यों ही उसका पैर पानी पर पड़ता, त्यों ही एक कमल दल स्वतः विकसित हो जाता, और उस पर वह पांव रख कर अगला पांव आगे बढ़ा देता, इस प्रकार वह अपनी सिद्धि के बल पर नदी या तालाब आदि को सहज ही पार कर लेता।

परन्तु उसमें धीरे धीरे घमण्ड का प्रादुर्भाव हो गया, इस सिद्धि के बाद उसने अनुभव किया कि मैं अब सिद्ध हो चुका हूं, और उसने अपने आपको सिद्ध के रूप में स्थापित करने का प्रयत्न प्रारम्भ कर दिया, वह शंकराचार्य की तरह ही रहने लगा, उसी तरह के वस्त्र, धारण करने लगा, प्रवचन प्रारम्भ करने से पूर्व उसी प्रकार से वाग्देवी को स्मरण कर प्रवचन प्रारम्भ करता, उसी प्रकार चाल-ढ़ाल, बोल-चाल, हाव-भाव, आदि क्रियाएं करने लगा। यह सब कुछ शंकराचार्य देख रहे थे, वे देख रहे थे कि अभी इसमें कोई विशेष सिद्धि नहीं आ पाई है. परन्तु फिर भी इस समय इसमें इतना दर्प, इतना अहंकार व्याप्त हो गया, तो आगे चल कर इसका पतन निश्चित है। जो समय से पहले ही फल पक जाता है, वह वे स्वाद हो जाता है, जो समय से पहले ही भोजन परोस दिया जाता है वह निस्वाद हो जाता है; और जो समय से पहले ही गुरू बनने की प्रक्रिया प्रारम्भ कर लेता हैं, उसका पतन और मृत्यु निश्चित होती है, परन्तु अत्यन्त धैर्यशाली शंकराचार्य चुप थे, और प्रकृति की लीला को अपनी आंखों से देख रहे थे।

परन्तु पादपद्म पर तो अहंकार का नशा चढ़ा हुआ था, दूर से मृत्यु बैठी बैठी उसे निहार रही थी, और तभी उसने शंकराचार्य को गलत तथ्यों का आधार देकर उज्जयिनी में विशाल यज्ञ करने का प्रस्ताव रखा, और यज्ञ का चिन्तन प्रारम्भ किया, शंकराचार्य समझ रहे थे, कि भारतवर्ष का केन्द्र उज्जैन, विद्वानों और राजनीतिज्ञों का आधार स्थल है अतः यदि पादपद्म यहां यज्ञ कर लेता है, तो यह अच्छा ही प्रयास है, इससे सनातन धर्म को बल ही मिलेगा।

परन्तु शंकराचार्य देख रहे थे, कि इस यज्ञ की जो रूपरेखा बन रही है, इस यज्ञ का जो प्रारूप निर्मित हो रहा है, वह सनातन धर्म के नियमों के विपरीत है। उन्होंने दूर बैठे बैठे ही अनुभव किया कि पादपद्म कुटिलता से इस यज्ञ को सम्पन्न करने की चेष्टा कर रहा है, इस सारे आयोजन के पीछे केवल अपने आपको स्थापित करने की प्रक्रिया का प्रयास है, परन्तु शंकराचार्य कुछ समय और ठहर कर यह सब देख लेना चाहते थे पर पादपद्म अपने उसी प्रयास में रत रहा, **उसने अनुभव कर लिया कि मैं सिद्ध हूं, और यदि उज्जयिनी के इस यज्ञ में मैं अपने आपको प्रामाणिकता के साथ स्थापित कर लूंगा तो पूरे भारतवर्ष में मैं स्थापित हो सकूंगा और यह अहसास करा सकूंगा कि मैं बहुत कुछ हूं।**

शंकराचार्य ने उसे समझाया कि तुम्हारा यह प्रयास ज्यादा उचित नहीं है, भगवती लीला विहारिणी की भ्रुकुटि को मैं देख रहा हूं, **यह एक प्रकार से आत्मघाती प्रयास है, और आने वाली पीढ़ियां तुम्हारा नाम होठों से घृणा के साथ लेगी।**

परन्तु पादपद्म **निश्चिन्त था, क्योंकि वह तो यही**

चाहता था कि शंकराचार्य को इस यज्ञ में दूसरे दर्जे पर खड़ा कर दिया जाय, पादपद्म के साथ उज्जैन के महाराजा और शहर के प्रतिष्ठित व्यक्ति थे. और इससे उसके अहंकार को ज्यादा बल मिला, वह समझ गया कि मैं सब कुछ हूं और उज्जयिनी का यह यज्ञ अगर हो रहा है तो मेरे दम खम पर हो रहा है, मैं इस यज्ञ को ऐतिहासिक बना सकूंगा मैं सारे सम्राटों और राजाओं के बीच यह स्पष्ट कर सकूंगा कि मुझ में अद्वितीय संगठन शक्ति है, मुझ में अप्रतिम बुद्धि और चातुर्य है, मुझ में श्रेष्ठतम ज्ञान और सिद्धियां है।

भगवतपाद शंकराचार्य अत्यन्त व्यथित और दुखी मन से यह सब कुछ देख रहे थे, परन्तु शिष्य की प्रियता भी उनके मानस में थी, जब पादपद्म ने उन्हें इस यज्ञ में भाग लेने के लिए प्रेरित किया, तो शंकराचार्य ने इसमें भाग लेने से मना कर दिया, परन्तु पादपद्म ने बहुत जिद की, जरूरत से ज्यादा अनुनय विनय किया, तो शंकराचार्य ने इसमें भाग लेने का निश्चय कर लिया।

शंकराचार्य ने जब उज्जयिनी में प्रवेश किया, तो लाखों लाखों व्यक्ति उनके दर्शनों के लिए उमड़ पड़े। सैकड़ों राजनयिक और सम्राट उनके चरणों में गिर पड़े। और पादपद्म एक तरफ खड़ा खड़ा यह देख रहा था, कुढ़ रहा था, **उसने अनुभव किया कि मैं जिस भीड़ की कल्पना अपने बल बूते पर कर रहा था, वह मेरे नाम की वजह से एकत्र नहीं हो रही थी, अपितु शंकराचार्य के दर्शन करने और उन्हें सुनने के लिए लालायित थी। उस भीड़ को, शंकराचार्य की जय जयकार को एक तरफ खड़ा खड़ा पादपद्म सुन रहा था और उसे ऐसा लग रहा था कि जैसे उसके कानों में शीशा पिघला कर डाल दिया हो।**

शंकराचार्य अपने विश्राम स्थल पर पहुंचे, पादपद्म ने अनुभव किया कि शंकराचार्य के रहते, वह अपने आपको किसी भी हालत में स्थापित नहीं कर, सकेगा, उसने जो कल्पना की थी, उसने जो स्वप्न संजोया था, वह पूरा नहीं हो सकेगा, और उसी दिन पादपद्म ने शंकराचार्य के भोजन में जहर देकर उन्हें समाप्त कर दिया।

शंकराचार्य मृत्यु के अंतिम क्षणों में थे, पास में सभी शिष्य खड़े थे, और शंकराचार्य के होठों से निकला **प्रभु ! अब भविष्य में कोई और पादपद्म पैदा मत करना....**

(शेष पृष्ठ १६ का)

पति, पुत्र आदि के बिम्ब भी साफ साफ स्पष्ट होंगे। दूसरे या तीसरे दिन यह भी स्पष्ट हो जायेगा कि वे वर्तमान में कहां पर है, कहा जन्म लिया है, किस प्रकार के वातावरण में है, आदि आदि।

एक प्रकार से देखा जाय तो इस साधना से उसके पिछले जीवन के सारे कार्य सारे दृश्य और सारी घटनाएं आंखों के सामने स्पष्ट हो जायेगी और फिर प्रयत्न करके उनसे मिला जा सकता है, और मिलते ही एक विद्युत प्रवाह सा होगा, फिर ज्यादा परिचय करने की जरूरत ही नहीं है, स्वतः ही परस्पर आकर्षण स्नेह और सामीप्यता बढ़ जायेगी और जब इस प्रकार हो जायेगा तो आत्मा, मूल आत्मा से मिल कर सभी दृष्टियों से पूर्णता अनुभव कर सकेगी और जब ऐसा होता है तभी वर्तमान जीवन में पूर्णता और आनन्द सम्पन्न होता है।

साबर साधना

संसार का सर्वाधिक महत्वपूर्ण तेजस्वी और दुर्लभ

तांत्रोक्त नारियल

जो भौतिक चमत्कार और सिद्धियां देने में सहायक है

हमारे शास्त्रों में और विशेष कर तांत्रिक ग्रन्थों में, कुछ ऐसी साधनाएं दी है, जो अपने आप में दुर्लभ और महत्वपूर्ण है, इस प्रकार की साधनाएं, अधिकतर गोपनीय रही, क्यों कि ये साधनाएं गृहस्थ व्यक्तियों के लिए ज्यादा महत्वपूर्ण एवं उपयोगी थी, और जिन लोगों के पास इस प्रकार का ज्ञान था, जिन साधु सन्यासियों के पास इस प्रकार की सिद्धियां थी, वे आम गृहस्थ से कटे हुए गुफाओं और कन्दराओं में निवास करते थे, उन्हें इन सिद्धियों से कोई ज्यादा लेना देना नहीं था, जब भी कोई गृहस्थ शिष्य उनके पास आता और उनकी सेवा करता तो उनकी सेवा से प्रसन्न हो कर इस प्रकार की कोई साधना या मंत्र उसे बता देते, और वह वास्तव में ही धन्य धन्य हो जाता।

गुरू गोरखनाथ और उनके बाद के आचार्यों तान्त्रिकों ने इस पद्धति को ज्यादा बल दिया, उन्होंने अनुभव किया, कि साबर साधनाओं तथा साबर मंत्रों के द्वारा ज्यादा श्रेष्ठ और शीघ्र सफलता प्राप्त हो पाती है, गृहस्थ व्यक्तियों की अपनी कुछ समस्याएं है, वे न तो ज्यादा पूजा पाठ कर पाते है, न ज्यादा समय तक एक आसन पर बैठे रह सकते है, उनके लिए तो कोई ऐसी सरल और सीधी साधना या मंत्र प्रक्रिया होनी चाहिए, जिसको कम समय में सम्पन्न कर ज्यादा से ज्यादा लाभ उठा सके। गोरखनाथ के समय तक आते आते संस्कृत भाषा क्लिष्ट और कठिन मानी जाने लगी थी, इसीलिए सरल और प्राकृतिक शब्दों में मंत्रों की रचना की गयी और इन मंत्रों के माध्यम से इन योगियों ने साधनाएं कर यह प्रामाणित

कर दिया कि इन साधनाओं के द्वारा जीवन में सफलता पाई जा सकती है, ये मंत्र भी उतने ही प्रामाणिक है जितने संस्कृत भाषा के मंत्र।

साबर साधना

साबर साधना का तात्पर्य सरल और प्राकृत भाषा में मंत्र उच्चारण कर पूर्ण सफलता प्राप्त कर लेने की क्रिया। साबर साधना ऐसी साधना होती है, जिसमें ज्यादा आसन मुद्राएं और प्राणायाम का विधान नहीं होता। साबर साधनाएं ऐसी होती है जिनमें कोई विशेष बन्धन अथवा नियम उपनियम नहीं होते, और साबर साधनाएं ऐसी होती है, जो सीधे सादे ढंग से जल्दी और पूर्ण प्रामाणिकता के साथ सफलता पायी जा सकती है।

आगे चल कर श्रेष्ठ योगियों ने भी साबर साधनाओं को और इनके मंत्रों को अपनाया, उन्होंने अनुभव किया कि ये मंत्र दिखने में सरल और सीधे सादे है परन्तु इनका प्रभाव अपने आप में अचूक और अद्वितीय है, इन मंत्रों के माध्यम से किसी भी प्रकार का कार्य सम्पन्न किया जा सकता है, **खासतौर से गृहस्थ व्यक्तियों के लिए तो साबर साधनाएं और साबर मंत्र कल्प वृक्ष के समान शीघ्र फलदायक हैं**, तभी उन्होंने स्वयं साबर साधनाएं की, और साथ ही साथ अपने गृहस्थ शिष्यों और साधकों को भी साबर साधनाओं का ज्ञान दिया, इसकी विधि बताई और इसके माध्यम से सफलता दिला कर यह अहसास करा दिया कि वास्तव में ही गुरू गोरखनाथ कालजयी और अद्वितीय युग पुरूष थे।

तांत्रोक्त नारियल

यों तो बाजार में नारियल या श्री फल मिलते ही हैं, उनका अधिकतर उपयोग यज्ञों में या पूजा पाठ में होता है, दूसरे एकाक्षी नारियल होते है, जिनका प्रयोग साधनाओं में किया जाता है। तीसरे प्रकार के नारियल छोटे आकार के पर महत्वपूर्ण होते है, जिनका प्रयोग साधनाओं में किया जाता है। जिन्हें **"तांत्रोक्त-नारियल"** कहते है। ये नारियल अपने आप में ही दुर्लभ और महत्वपूर्ण होते है पर इस प्रकार के नारियल अत्यन्त कठिनाई से प्राप्त होते है, परन्तु साबर साधनाओं में और कुछ विशेष साधनाओं में इन तांत्रोक्त नारियलों का बहुत अधिक महत्व बताया गया है तथा इसके द्वारा गृहस्थ की कई समस्याओं का समाधान किया जाता है।

योगियों में इसके बारे में कई कहावते प्रचलित है। उनके अनुसार—

जिनके घर तंतर नारेल।
लक्ष्मी जी का ऐल फेल।

● ★ ●

जिसने तंतर नारेल साजा।
किया करेगा विगड़ा राजा।।

उपरोक्त जन श्रुतियां इस बात की गवाह है कि इन योगियों और साधकों के मन में तांत्रोक्त नारियल के प्रति गहरी आस्था है, उन्होंने इस प्रकार के नारियल के साथ प्रयोग किये हैं और अपने गृहस्थ शिष्यों से प्रयोग करवाये है, उन्होंने इन प्रयोगों के बाद अनुभव किया है कि इनके द्वारा जो प्रयोग किये जाते है, वे तुरन्त सिद्धिप्रद होते है, उनका प्रभाव तुरन्त होता है, और जिस प्रकार से चाहते है, उसी प्रकार से सफलता मिल जाती है।

आगे चल कर चिड़िया नाथ जी ने तो तांत्रोक्त नारियल और उस से संबंधित साधनाओं पर पूरी की पूरी पुस्तक लिख डाली, जो कि साबर साधकों के लिए गीता की तरह है। इस पुस्तक में १०८ प्रयोग तांत्रोक्त नारियल के दिये है और ये सभी प्रयोग अपने आपमें अचूक है तथा तुरन्त सफलतादायक है।

बाद के सिद्धो और साधकों ने अनुभव किया कि

वास्तव में ही आज के युग में तांत्रोक्त नारियल जीवन की समस्याओं को मिटाने और बाधाओं को दूर करने में बेजोड़ है, उन्होंने यह अनुभव किया कि यदि घर में तांत्रोक्त नारियल रहता है, तो स्वतः ही लक्ष्मी का वास घर में बना रहता है. यदि किसी प्रकार का प्रयोग न भी किया जाय तब भी कई बाधाएं तो स्वतः दूर होती है।

तांत्रोक्त नारियल : कुछ उपयोगिताएं

आगे के सिद्धों, साधकों और गृहस्थ व्यक्तियों के अनुभव तांत्रोक्त ग्रन्थों में आसानी से उपलब्ध होते है। नीचे मैं उन लाभों की चर्चा कर रहा हूं जो घर में तांत्रोक्त नारियल रखने से प्राप्त होते है। इसके लिए किसी प्रकार की कोई साधना या मंत्र जप करने की जरूरत नहीं है, जिस प्रकार से यदि घर में अगरबत्ती जला कर रख दी जाय तो जिस घर में भी वह अगरबत्ती जलेगी उस घर में सुगन्ध प्रदान करेगी, ठीक इसी प्रकार से मंत्र सिद्ध और गुरु गोरखनाथ के मंत्रों से चैतन्य तांत्रोक्त नारियल घर में रखा जाय तो निम्न लाभ तो स्वतः प्राप्त होने लगते है-

१- तांत्रोक्त नारियल घर में रखने से स्वतः लक्ष्मी का वास प्रारम्भ हो जाता है और आर्थिक अनुकूलता होने लगती है।

२- इस नारियल को घर में रखने से यदि घर पर किसी प्रकार का तांत्रिक प्रयोग किया हुआ हो तो वह दूर हो जाता हैं।

३- इस नारियल को घर में रखने से भूत, प्रेत पिशाच आदि का भय व्याप्त नहीं होता।

४- इस नारियल को घर में रखने से वातावरण शुद्ध रहता है और आकस्मिक धन प्राप्ति की संभावनाएं बनती है।

५- जिसके घर में तांत्रोक्त नारियल रहता है, उसके घर के व्यक्तियों में परस्पर प्रेम, भाई चारा और आत्मीयता पूर्ण संबंध बने रहते है।

६- इस तांत्रोक्त नारियल के घर में रहने से बालकों की बुद्धि शुद्ध, निर्मल और आध्यात्मिक बनी रहती है।

७- जिसके घर में तांत्रोक्त नारियल होता है, उसे पूरे जीवन में किसी प्रकार का भय व्याप्त नहीं होता, न घर में महामारी या बीमारी आती है।

८- यदि तांबे के पात्र में तांत्रोक्त नारियल रख कर उस पानी को घर में छिड़क दिया जाय तो सभी प्रकार के कष्ट और बीमारियां स्वतः ही समाप्त हो जाती है।

९- यदि स्नान करने की बाल्टी में तांत्रोक्त नारियल डाल कर जल भर कर उस पानी से स्नान किया जाय तो किसी भी प्रकार की बीमारी समाप्त हो जाती हैं।

१०- यदि तांत्रोक्त नारियल को लाल कपडे में बांध कर किसी लकड़ी के सहारे छत पर लटका दिया जाय तो हवा लगने से ज्यों ज्यों वह लाल कपड़ा फहरायेगा त्यों त्यों उसके घर में लक्ष्मी का वास और आर्थिक उन्नति होती रहेगी।

११- तांत्रोक्त नारियल के द्वारा गृहस्थ जीवन में अनुरूपता और एकता लाई जा सकती है. इसके घर में रहने से लड़ाई झगडे, मतभेद, आदि स्वयं समाप्त हो जाते है और गृहस्थ जीवन में पूर्णता अनुकूलता आने लगती है।

१२- जिस घर में तांत्रोक्त नारियल रहता है, उसके घर में समस्त प्रकार की सिद्धियां स्वतः वास करती रहती है, और ऐसे साधक को प्रत्येक प्रकार की साधना में शीघ्र लाभ होता है।

ऊपर मैंने तांत्रोक्त नारियल के कुछ विशेष लाभ बताये, इसके अलावा भी तांत्रोक्त नारियल से कई प्रयोग सिद्ध किये जा सकते है। धर्म परायण व्यक्ति तांत्रोक्त

नारियल अपने आस पास के घरों में सगे संबंधियों में वितरित करते है और इसके लाभ उन्हें बता कर उनको अनुकूलता प्रदान करते है। कई लोग इन तांत्रोक्त नारियलों को प्राप्त कर गरीब व्यक्तियों में वितरित कर उनके जीवन में पूर्णता तथा समृद्धता लाने का प्रयास करते है।

इसके अलावा मैं कुछ विशेष प्रयोग इस नारियल के लिख रहा हूं, जिसके द्वारा विशेष अनुकूलता प्राप्त होती है।

चमत्कारिक वशीकरण प्रयोग

यों तो तांत्रिक ग्रन्थों में कई प्रकार के वशीकरण प्रयोग दिये गये है, परन्तु यह प्रयोग अपने आप में चमत्कारिक है। साधक स्वयं इसको आजमा कर के देखे तो उनको अहसास होगा कि वास्तव में ही तांत्रोक्त नारियल के माध्यम से कठोर से कठोर व्यक्ति को भी अपने अनुकूल बनाया जा सकता है और पूरी तरह से उसे अपने वश में किया जा सकता है।

इससे पति को, पत्नी को, पुत्र या पुत्री को नौकर अथवा मालिक को शत्रु अथवा मित्र को, अधिकारी को, या किसी भी पुरुष या स्त्री को अपने अनुकूल बनाया जा सकता है और उससे मनोवांछित कार्य सम्पन्न करवाया जा सकता है।

मंगलवार की रात्रि को पीली धोती पहिन कर साधक उत्तर की ओर मुंह कर बैठ जाय और सामने किसी पात्र में तांत्रोक्त नारियल रख दें, और उस पर कुंकुम की सात बिन्दियां लगावे, सामने तीन तेल के दीपक लगावे, और फिर मूंगे की माला से निम्न मंत्र की ग्यारह माला मंत्र जप करें—

साबर वशीकरण मंत्र

अखण्ड वीर का चेला। क्या झेला क्या खेला। अमुक को मेरे वश में करे, जो न करे तो वीर हनुमान की दुहाई। शब्द साचा पिण्ड काचा। फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

फिर दूसरे दिन वह तांत्रोक्त नारियल अपने पहिनने के कपड़ों में छिपा कर उस पुरुष या स्त्री के सामने जावे तो उसको देखते ही वह पूर्णतः वश में हो जाता है, और साधक यह देख कर चमत्कृत हो जाता है कि जो काम वह पहले अनुनय विनय के बाद भी नहीं करता था, तुरन्त करने के लिए तैयार हो गया है।

विद्वेषण प्रयोग

विद्वेषण का तात्पर्य है, परस्पर मतभेद या लड़ाई करवाना। यदि घर की लड़की कहने में नहीं हो और उसका किसी अन्य से संबंध चल रहा हो तो इस प्रयोग से परस्पर उन दोनों के बीच जबरदस्त मतभेद हो जायेगे और जीवन भर के लिए उनका संबंध समाप्त हो जायेगा।

इसी प्रकार यदि शत्रु के घर में यह प्रयोग कर दिया जाय तो शत्रु के घर में बराबर कलह बनी रहेगी और उनके घर के लोग परस्पर लड़ते ही रहेगे, जिससे घर का मुखिया जरूरत से ज्यादा दुखी और तनाव ग्रस्त हो जायेगा।

रविवार की रात्रि को साधक पीली धोती पहिन कर दक्षिण दिशा की ओर मुंह कर बैठ जाय और सामने दो तांत्रिक नारियल (तांत्रिक नारियलो का जोड़ा) किसी पात्र में स्थापित कर दे, और उस पर एक एक काजल की बिन्दी लगा दे। इसके बाद दो तेल के दीपक जला ले और फिर नीचे लिखा हुआ मंत्र जप ग्यारह माला संपन्न करे, इसमें मूंगे की माला का प्रयोग होना चाहिए।

साबर विद्वेषण मंत्र

काल काल काली कंकालो, मारे ताली देवे लाली। अमुक को अमुक से विद्वेषण करावे, कारज करे सिद्ध करवावे। हाथों हाथ लड़ावे चढ़ावे ॐ ठं ठं फट्॥

(शेष पृष्ठ २९ पर)

२३-७-८६ को महालक्ष्मी जयन्ती के अवसर पर

निधि विद्या, भूगर्भ सिद्धि एवं अक्षय कोष सिद्धि हेतु

धनाधीश कुबेर साधना

धनाधीश कुबेर समस्त पृथ्वी पर जो सम्पदा बिखरी हुई है, उसके अधिपति है, यही नहीं अपितु जमीन के अन्दर जितना भी धन, रत्न और सम्पदा छिपी हुई है, उसके अधिपति भी कुबेर को ही माना गया है। आकस्मिक धन प्राप्ति, जुए द्वारा या लौटरी अथवा अन्य श्रेष्ठ उपायों द्वारा लक्ष्मी की स्थायी प्राप्ति का आधार भी कुबेर को ही माना गया है। देवताओं और मनुष्यों के निवास करने योग्य जितनी भी पृथ्वी है, उस सारी पृथ्वी की सम्पदा के एक मात्र अधिपति देवता धनाधीश कुबेर है। भगवान विष्णु भी लक्ष्मी को प्रिय रखने के लिए कुबेर को ही आधार मानते है, स्वर्णमयी लंका के निर्माण में कुबेर का महत्वपूर्ण हाथ रहा है, कुबेर ही सही अर्थो में लंका के अधिपति थे, और ब्रह्मा ने स्वयं अपने हाथों से उन्हें पुष्पक विमान भेंट किया था।

पुराणों के अनुसार महर्षि पुलस्त्य के पुत्र योगीराज विश्रवा ने भरद्वाज की कन्या इलविला से विवाह किया था, और इसी से कुबेर की उत्पत्ति हुई थी, बाल्यावस्था से ही कुबेर भगवान ब्रह्मा के साधक बने और ब्रह्मा की साधना कर उन्होंने विशेष सिद्धि प्राप्त की ब्रह्मा ने इन्हें संसार की समस्त सम्पत्ति का अधिकारी बनाया और कैलाश पर्वत के समीप अलकापुरी के ये स्वामी बने।

सही अर्थो में देखा जाय तो वेदों और पुराणों में लक्ष्मी की साधनाएं कम दी गई है, इसकी अपेक्षा कुबेर साधना पर विशेष बल दिया गया है, उनके अनुसार यदि जीवन में पूर्ण ऐश्वर्य प्राप्त करना है, तो कुबेर साधना के द्वारा ही संभव है। इस साधना के तीन लाभ महर्षियों ने बताये है—

(१) कुबेर साधना सिद्ध करने से धनाधीश कुबेर प्रसन्न होते है, और साधक के जीवन में सभी दृष्टियों से समृद्धता एवं सफलता प्रदान करते है।

(२) कुबेर साधना के द्वारा साधक को विशेष सिद्धि प्राप्त हो जाती है, जिसे "भूगर्भ सिद्धि" कहा गया हैं, इसके द्वारा साधक को जमीन के अन्दर छिपे हुए खजाने का पता चल जाता है, उसे यह पता चल जाता है, कि कहां पर कितनी गहराई में कितना स्वर्ण भण्डार या द्रव्य गड़ा हुआ है, और उसको किस प्रकार से निकाला जा सकता है।

(३) इस साधना के द्वारा साधक के जीवन में "अक्षय कोष सिद्धि" प्राप्त होती है, वह ज्यों ज्यों खर्च करता है, त्यों त्यों उसकी सम्पत्ति बेतहासा बढ़ती ही जाती है, यह पता ही नहीं चलता, कि इतना धन कहां से आ रहा है और किस प्रकार से आ रहा है, यह इस साधना की सिद्धि का चमत्कार है।

मेरा अनुभव

मेरे पिताजी वीतरागी थे, मेरी मां की मृत्यु के बाद उन्होंने सन्यास धारण कर लिया था, उनके जीवन में मैं अकेला ही पुत्र था, परन्तु वे अधिकतर हिमालय में ही विचरण करते रहते थे नवीन स्थानों का पता लगाना, उच्चकोटि के योगियों और सन्यासियों से मिलना उनका स्वभाव था, हिमालय में ही उन्होंने तीन बार मानसरोवर की यात्रा की थी और पूरे कैलाश पर्वत की परिक्रमा कर अलकापुरी पर्वत पर विचरण किया था।

कुबेर के गन्धमादन पर्वत पर विचरण करते समय मेरे पिताजी की एक वृद्ध सन्यासी से भेंट हुई थी, और उन्होंने मेरे पिताजी को धनाधीश कुबेर साधना सम्पन्न करवा दी थी, उन्होंने बताया था कि इस साधना से जीवन में किसी प्रकार का कोई अभाव रहेगा ही नहीं, और रवाना होते समय उस ऋषि ने मेरे पिताजी को एक लाल झोली भेंट कर दी थी, जिसे मेरे पिताजी बगल में दबाये रखते थे, परन्तु वह छोटी सी झोली, जो उनके बगल में दबी रहती थी, अपने आप में चमत्कारिक थी, वे उसमें से जितना भी द्रव्य, निकालते, झोली खाली होती ही नहीं थी, उन्होंने अपने जीवन में ३२ भण्डारे किये थे, और एक एक बार में हजारों लाखों साधु सन्यासियों को भोजन करवाया था। लोग देखते कि वे फक्कड़ आदमी थे, अपने पास एक दण्ड, एक लंगोटी और एक उस झोली के अलावा कुछ भी नहीं रखते थे, परन्तु फिर भी उन्हें यह विशेष सिद्धि प्राप्त थी कि वे उस झोली में से जितना भी द्रव्य निकालते, वह झोली खाली ही नहीं होती थी यह तो मैंने अपनी आंखों देखा था और हजारों बार अनुभव किया था।

अंतिम समय में वे घर पर आ गये थे और मुझे लगभग डेढ वर्ष तक लगातार उनकी सेवा करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था, उन्हें भूगर्भ सिद्धि प्राप्त थी, और कई लोगों के घर में छिपी हुई निधि को उन्होंने निकलवाया था, उन्हें इस बात का इतना अच्छा अभ्यास था, कि वे जमीन में गड़ी हुई सम्पत्ति का प्रामाणिक विवरण दे देते थे, और साथ ही साथ वे उस विशेष स्थान को बता देते थे, जहां सम्पत्ति गड़ी हुई होती थी और यह भी बता देते थे कि वह सम्पत्ति कितनी गहराई में गड़ी हुई है, और किस प्रकार से निकाला जा सकता है।

अपने अंतिम दिनों में वे अत्यन्त कमजोर हो गये थे, एक दिन उन्होंने कुबेर साधना की चर्चा की और बताया कि यह साधना यों तो कभी भी सम्पन्न की जा सकती हैं, पर ग्रहण, के समय दिवाली या महालक्ष्मी जयन्ती के अवसर पर इस साधना को अवश्य ही सम्पन्न करनी चाहिए, सौभाग्य से इस वर्ष २३-७-८९ को "महालक्ष्मी जयन्ती" है।

साधना विधि

मेरे पिताजी ने जिस प्रकार से मुझे इसका प्रयोग और विधि समझाई थी वह अपने आपमें महत्वपूर्ण है, मैंने अनुभव किया है कि धनप्रदायक साधनाओं में यह सर्व श्रेष्ठ और अपने आपमें अद्वितीय है। वास्तव में ही जो दुर्भाग्यशाली होते है, वे ही ऐसे अवसर को हाथ से जाने

देते है। साधकों को चाहिए कि वे वर्ष में जब भी अवसर मिले, इस साधना को तो अवश्य ही सम्पन्न करे।

महालक्ष्मी जयन्ती (२३-७-८९) के अवसर पर साधक प्रातः काल स्नान कर शुद्ध पीले वस्त्र धारण कर अपनी पत्नी के साथ या अकेले पीले आसन पर उत्तर दिशा की ओर मुंह कर बैठ जाय और सामने एक पात्र में (जो कि स्टील या लोहे का न हो) केसर से स्वस्तिक का चिन्ह बनावे, और उस पर चावलों की ढेरी बनाकर उस ढेरी पर एक छोटा सा पात्र या कटोरी रख दें, और उस में धनाधीश कुबेर यंत्र को स्थापित कर दे, यह यंत्र रावण संहिता के अनुसार सिद्ध और चैतन्य होना चाहिए, यदि संभव हो तो इसके साथ ही कुबेर चित्र भी स्थापित कर दे।

शास्त्रों में बताया गया है, कि श्वेत वर्ण, मोटा शरीर, अष्ट दन्त एवं तीन चरणों वाले गदाधारी कुबेर अत्यन्त ही सुन्दर दिखाई देते है, और इनके अनुचर यक्ष निरन्तर इनकी सेवा में बने रहते है। अप्सराएं इनके सामने नृत्य करती रहती हैं, और इनका सारा शरीर स्वर्ण तथा रत्नों से आच्छादित है।

यदि चित्र नहीं हो तो यंत्र को स्थापित कर दे और फिर सामने आटे का चार मुंह वाला दीपक लगाकर उसमें घी भर ले और चार वत्तियां लगा ले, जिसे चौमुहाँ दीपक कहते है।

इसके बाद साधक सबसे पहले संक्षिप्त गणपति पूजन करे, यदि उसके घर में लक्ष्मी का चित्र हो तो सामान्य भाव से लक्ष्मी का पूजन करे और फिर कुबेर चित्र का पूजन कर, उसे स्थापित करे। तत्पश्चात् निम्न यंत्र एक अन्य थाली में बनावे।

धनाधीश कुबेर यंत्र

१६	१	१४	७
६	४	५	३
१५	९	२	८
१५	११	७	१३

यह चांदी की सलाका या किसी अन्य सलाका के द्वारा निर्मित करे, और फिर इसकी पूजा करे। इसके बाद दोनों हाथ जोड़ कर भगवान कुबेर का ध्यान करे।

ध्यान

मनुज बाह्य-विमानपरिस्थतिम् गरूड़ रत्न निभं निधि-नायकम्।

शिव-सख मुकुटादि-विभूषितम्, वर-गदे दधतं भज तुन्दिलम्।

इस प्रकार से ध्यान सम्पन्न कर फिर हाथ में जल लेकर विनियोग करे—

विनियोग

ॐ अस्य श्री कुबेर मन्त्रस्य विश्रवा ऋषिः, वृहती छन्द, कुबेरः देवता, अक्षय, निधि सिद्धये जपे विनियोगः।

तत्पश्चात् ऋष्यादि-न्यास करे—

विश्रवा ऋषये नमः शिरसि,
वृहती छन्द से नमः मुखे
कुबेर देवताय नमः हृदि
अक्षय निधि सिद्धये जपे विनियोगाय नमः सर्वांगे।

ऐसा करने के बाद साधक निम्न प्रकार से अपने शरीर को स्पर्श करता हुआ अंग न्यास करे—

षडंग न्यास	कर न्यास	अंग न्यास
ॐ यक्षाय	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
ॐ कुबेराय	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्ववाहा
ॐ वैश्रवणाय	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखाये वषट्
ॐ धन-धान्या-धिपतये	अनामिकाभ्यां हुं	कवचाय हुं
ॐ अक्षय निधि समृद्धि में	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
ॐ देहि द्रापय स्वाहा	कर-तल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

इसके बाद शुद्ध स्फटिक माला से भगवान कुबेर का गोपनीय मंत्र आठ माला मंत्र जप सम्पन्न करे। यह मुझे मेरे पिताजी ने अत्यन्त गोपनीय ढंग से दिया था जो कि अपने आप में दुर्लभ और अद्वितीय रूप से चमत्कारिक है।

जब मंत्र जप पूरा हो जाय तब इसी मंत्र की १०८ शुद्ध घृत की आहुतियां दे दे, और उस माला को अपने गले में धारण कर ले, और यंत्र को जहां रुपये पैसे रखते है, वहां पर स्थापित कर दे। यदि संभव हो तो किसी कन्या को या ब्राह्मण को अपने घर में बुलाकर भोजन करवा दें, ऐसा करने पर यह प्रयोग सिद्ध होता है।

वास्तव में ही यह प्रयोग अपने आपमें अत्यन्त दुर्लभ और महत्वपूर्ण है, कई साधक तो प्रत्येक अमावस्या को यह प्रयोग सम्पन्न करते है। कहा जाता है कि जो एक वर्ष तक प्रत्येक अमावस्या को यह प्रयोग सम्पन्न कर लेता है, उसकी आगे की सात पीढ़िया पूर्ण सम्पन्न और सुख सौभाग्य युक्त बनी रहती है।

कुबेर मंत्र

ॐ यक्षाय कुबेराय धन-धान्याधिपतये अक्षय निधि समृद्धि मे देहि दापय स्वाहा।

● ★ ●

(शेष पृष्ठ २५ का)

इसके बाद दूसरे दिन घर की लड़की का पहना हुआ कोई कपड़ा हो तो उसमें इस नारियल को बांध कर रख दे, या शत्रु हो तो उसके घर में यह नारियल फिकवा दे, तो निश्चय ही जिस प्रकार से आपने चाहा है, उस प्रकार से विद्वेषण हो जायेगा, और आप अपने जीवन में मनो-वांछित सफलता प्राप्त कर सकेगे।

व्यापार वर्धक प्रयोग

यदि व्यापार नहीं चल रहा हो, या ग्राहक कम आ रहे हो, अथवा व्यापार में बाधाएं आ रही हो, या दुकान पर किसी ने तांत्रिक प्रयोग कर दिया हो तो नीचे लिखे प्रयोग से इस समस्या का समाधान हो जाता है, और जब तक वह नारियल दुकान में रहेगा, निरन्तर व्यापारिक उन्नति और आर्थिक वृद्धि होती रहेगी।

इसके लिए साधक शनिवार की रात्रि को स्नान कर पीली धोती पहिन कर एक पात्र में थोडे से चावल और उस पर तांत्रिक नारियल रख दे और कुंकुम की बिन्दी लगा दे और उसके सामने तेल का दीपक लगा कर मूंगे की माला से निम्न तीन मंत्र माला जप करें—

साबर व्यापार वर्धक मंत्र

जय जय लिछमी भंडारी भाली। सात दीप नव खंड सुहाई। रिद्धि सिद्धि के गुण गाई। साथ साथ आवे, लिछमी ला वैपार करावे, ज्यूं चाहूं त्यूं कार्ज करावे ॐ ठं ॐ। ●

भाग्योदय सिद्धि

पूरे भारत वर्ष में श्रावण कृष्ण त्रयोदशी अर्थात् ३०-७-८९ को "भाग्योदय दिवस" मनाया जाता है। शास्त्रों में और विशेष कर तांत्रिक ग्रन्थों में इस दिन का विशेष महत्व बताया गया है। मूलतः यह तांत्रिक पर्व है और उसी के अनुसार इससे संबंधित साधना करने पर जीवन में पूर्ण भाग्योदय संभव है।

भाग्योदय-तात्पर्य

यो तो प्रत्येक व्यक्ति अपने जीवन में प्रयत्न और परिश्रम करता ही है, और उसके अनुसार लाभ एवं सुख प्राप्त करता है परन्तु, इस प्रकार का लाभ और सुख परिश्रम से उपार्जित माना गया है। **भाग्योदय का तात्पर्य कम से कम परिश्रम में ज्यादा से ज्यादा धन लाभ, ऐश्वर्य प्राप्ति एवं आर्थिक उन्नति हैं। शास्त्रों में भाग्योदय का तात्पर्य बिना प्रयत्न किये स्वतः कार्य सिद्धि को माना है।** कई व्यक्ति अत्यन्त परिश्रम करने के बावजूद भी सफल नहीं हो पाते, परन्तु जिनका भाग्य प्रबल है, वे कम प्रयत्न में भी ज्यादा सफलता प्राप्त कर लेते है और अपने जीवनकाल में पूर्ण उन्नति को प्राप्त कर यश, और सम्मान उपार्जित करते है।

शास्त्रों में भाग्योदय का तात्पर्य निम्न चौदह पदार्थों की अनायास प्राप्ति को माना है। **जिनके जीवन में स्वतः ही ये चौदह पदार्थ प्राप्त होते रहते है, और उनके माध्यम से निरन्तर उन्नति करता रहता है, उसे भाग्यशाली माना जाता है। ये चौदह पदार्थ है, (१) स्वस्थ एवं सुन्दर देह, (२) पूर्ण रोगरहित जीवन (३) जरूरत से ज्यादा धन एवं ऐश्वर्य (४) पूर्ण पराक्रम, पौरूष एवं बल प्राप्ति (५) भूमि एवं भवन सुख, (६) पुत्र एवं संतान सुख (७) शत्रु मर्दन (८) सुयोग्य एवं सुन्दर पत्नी प्राप्ति एवं सफल गृहस्थ जीवन (९) अकाल मृत्यु निवारण (१०) राज्य में सम्मान एवं निरन्तर उन्नति (११) आय के विभिन्न स्रोत एवं अनायास धन प्राप्ति (१२) तीर्थ यात्रा पुण्य कार्य एवं समाज में सम्मान, (१३) विदेश यात्रा एवं विविध स्थानों का भ्रमण (१४) मन में पूर्ण शांन्ति एव मृत्यु के उपरान्त मोक्ष प्राप्ति।**

उपरोक्त चौदह पदार्थो को भाग्य माना गया है, जिसके जीवन में ये सभी पदार्थ स्वतः ही उपलब्ध होते रहते है, जो इसके माध्यम से निरन्तर उन्नति करता रहता है, वही वास्तव में भाग्यशाली माना जाता है।

परन्तु यह जरूरी नहीं है कि प्रत्येक को ये सभी पदार्थ या सुविधाएं आसानी से उपलब्ध हो, व्यक्ति परिश्रम करने के बावजूद भी पूर्ण सफलता नहीं प्राप्त कर पाता, दवाइयां लेने के बावजूद भी शरीर में कोई न कोई

बीमारी बनी ही रहती है। इसके अलावा आर्थिक अभाव पति पत्नि में मतभेद, संतान सुख में न्यूनता, या राज्य बाधा, शत्रु कष्ट, आदि कई तथ्य ऐसे है, जो चाहे अन-चाहे व्यक्ति के जीवन में बने रहते है, और इसकी वजह से व्यक्ति जितनी उन्नति करना चाहे, उतनी उन्नति नहीं कर पाता। उसके जीवन का अधिकांश भाग और उसकी शक्ति इन बाधाओं और समस्याओं का प्रतिकार करने में ही लग जाती है, और उसका पूरा जीवन परेशानी पूर्ण समस्याओं से ग्रस्त और चिन्तित बना रहता है, इसीलिए तांत्रिक ग्रन्थों में "भाग्योदय दिवस" मनाये जाने की प्रथा है, जिससे कि भाग्य बाधा समाप्त हो सके, जिससे भाग्य में यदि किसी प्रकार की कोई रूकावट हो, तो वह दूर हो सके, जिससे कि जीवन में पितृदोष, तंत्र दोष, या अन्य किसी प्रकार का दोष हो, तो वह दूर हो सके, और जीवन पूर्ण सौभाग्यशाली बन सके।

भाग्योदय पर्व

अप्रेल के अंक में "सिद्धाश्रम पंचांग" के अन्तर्गत जो तिथियों का हवाला दिया है, उसमें **"भाग्योदय दिवस"** का वर्णन भी दिया है और इस दिवस को देवता तो मनाते ही थे, ऋषियो, मुनियों, साधुओं, सन्यासियों ने भी इस महत्ता को अनुभव किया है और इस पर्व को वे पूर्ण श्रद्धायुक्त मना कर अपने जीवन के अभाव दूर करते थे, और जीवन में पूर्ण सौभाग्य सफलता एवं ऐश्वर्य उपार्जित करते थे।

मुण्डकोपनिषद में इस पर्व को मनाने के बारे में प्रामाणिक विवरण दिया है। मैंने स्वयं यह अनुभव किया है कि, यदि वर्ष में एक बार इस दिवस को और इस साधना विधि को भली प्रकार से मना लेते है तो पूरा वर्ष उसके जीवन में सौभाग्यदायक बना रहता है।

इस साधना को घर के सभी सदस्यों को करना चाहिए, जो कि समझदार है वह चाहे पुरूष हो या स्त्री, पुत्र हो या पुत्री, इस दिन का प्रयोग अवश्य ही करना चाहिए जो बालक है, और स्वयं प्रयोग सम्पन्न नहीं कर सकते उनको चाहिए कि उनके मां बाप या रिश्तेदार उनके लिए यह प्रयोग सम्पन्न करे।

प्रयोग विधि

३०-७-८९ को प्रातः काल उठ कर प्रसन्नता के साथ स्नान आदि कर पीली धोती पहिन कर साधक अपने पूजा स्थान में अपनी पत्नी और परिवार के साथ बैठ जाय और सामने प्रत्येक के लिए अलग अलग **"भाग्योदय यंत्र"** स्थापित करे जो कि तांत्रोक्त रूप से सिद्ध हो। यह भाग्योदय यंत्र अपने आप में अत्यन्त महत्वपूर्ण होता है इसका निर्माण विशेष विधि से किया जाता है, यदि साधक चाहे तो केवल अपने लिए ही भाग्योदय यंत्र मंगावे या अपनी पत्नी, पुत्र, या पुत्री के लिए भी मंगा सकता है, यह उसके विवेक पर निर्भर है।

सबसे पहले गणपति का पूजन करे, और गणपति से प्रार्थना करे कि उसके जीवन का सभी दृष्टियों से भाग्योदय हो, इसके बाद सामने एक थाली में सभी भाग्योदय यंत्र रख दें, और प्रत्येक यंत्र के सामने एक एक घी का दीपक प्रज्वलित करे। और अगरबत्ती लगावे। इसके बाद हाथ जोड़ कर पुरन्दर ऋषि द्वारा निम्न कवच का २१ बार उच्चारण करे—

रक्षा कवच

वज्रिणी पूर्वतो रक्षेंत आग्नेय्या परमेश्वरी।
दण्डिनी दक्षिणे रक्षेत नैऋत्यां खड्गिनी सदा।।
पश्चिमे पास-हस्ता च ध्वजस्था वायु दिड्-मुखे।
गदाधरी तथादिच्यां ऐशान्या च महेश्वरी।।
ऊर्ध्वं देशे पदमिनी मां अधस्तात पातु वैष्णवी।
एवं दश दिशो रक्षेत् सर्वदा भुवनेश्वरी।।

इसके बाद सामने दूसरी थाली में निम्न प्रकार से भाग्योदय यंत्र का निर्माण अष्ट गन्ध से करे। अष्ट गन्ध में निम्न प्रकार की आठ वस्तुएं होती है (१) चन्दन, (२) अगर, (३) केसर (४) कुंकुम (५) रोचन (६) शिला रस (७) जटामासी (८) कपूर-इन आठों को पीस कर स्याही बना कर किसी चान्दी की सलाका या तिनके से थाली में यंत्र निर्माण करे। आपने जितने भाग्योदय यंत्र प्राप्त किये है, उतनी ही थालियों में निम्न यंत्र भी निर्माण होगे।

भाग्योदय यंत्र निर्माण

श्रीं ऐं ह्लीं क्लीं क्रीं

३	२	८	७
१३	१२	१	६
४	९	६	११

बाएँ: हुं ह्रीं — दाएँ: भं सं

वैं निं हुं दुं क्रं

फिर इस यंत्र पर जो आपने भाग्योदय यंत्र प्राप्त किया है, उसको रख दें, और अपना बांया हाथ हृदय पर रखे, तथा दाहिने हाथ में पुष्प लेकर निम्न मंत्र क्रमशः पढ़ता हुआ सभी यन्त्रों को स्पर्श करे।

प्राण प्रतिष्ठा मंत्र

ॐ आं ह्रीं क्रीं यं रं लं वं शं षं सं हं हंसः सोहं मम प्राणाः इह प्राणाः ॐ ॐ ह्रां क्रों यं रं लं वं शं षं सं हं हंसः सोहं सर्व इन्द्रियाणि इह मम ॐ आं क्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हं हंसः सोहं मम वाङ् मनचक्षु श्रोत्र-जिव्हा-घ्राण प्राणा इहागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा

उपरोक्त प्राण प्रतिष्ठा मंत्र में तीन स्थान पर **"मम"** शब्द आया है, इस **"मम"** शब्द के स्थान पर साधक को अपना नाम उच्चारण करना चाहिए, या जिसके लिये भाग्योदय यत्र सम्पन्न हो रहा है, उसका नाम उच्चारण करना चाहिए।

इसके बाद साधक को चाहिए कि निम्न मंत्र की २१ माला मंत्र जप सम्पन्न करे, यदि एक भाग्योदय सिद्ध करना हो, या एक से ज्यादा भाग्योदय यंत्र सिद्ध करने हो केवल २१ माला मंत्र जप ही पर्याप्त है। इससे ज्यादा मंत्र जप करने की जरूरत नहीं है।

मंत्र

॥ ॐ ॐ ऐं ऐं श्रीं श्रीं श्रीं ह्रीं ह्रीं ऐं ऐं ॐ ॐ ॥

मंत्र के बाद जो यंत्र सामने रखे हुए है, और जिन जिन के ये यंत्र है, उन यंत्रों को संबंधित व्यक्ति धारण कर ले। इस यंत्र में कोई धागा या चैन पिरो सकते है, और यदि यंत्र पहिनने की व्यवस्था न हो तो साधक को चाहिए कि वो यन्त्र पूजा स्थान में ही रख दे, परन्तु महीने में एक बार २४ घंटों के लिए इस यंत्र को अवश्य ही धारण करे।

मैंने उपरोक्त प्रयोग पूर्णता के साथ स्पष्ट कर दिया है, जो तंत्र क्षेत्र में जाना चाहते है, उनको चाहिये कि वे आत्म कल्याण हेतु इस प्रकार के प्रयोग सम्पन्न करे और ज्यादा से ज्यादा पीड़ित एवं दुखी लोगों का कष्ट दूर करे।

चमत्कारिक साधनाएं

शीर्षक जरा अटपटा है जहां साधनाएं है वहां चमत्कार अत्यन्त तुच्छ वस्तु मानी जाती है, परन्तु आज के युग में आम मनुष्य को तरह यह धारणा बन रही है कि साधनाओं के माध्यम से चमत्कार दिखाकर ही जीवन में पूर्ण सफलता प्राप्त की जा सकती है।

इस लेख में उन छोटी-छोटी साधनाओ को और प्रयोगों को दे रहा हूँ, जो कि दिखने में अत्यन्त सामान्य प्रतीत हो रहे है परन्तु वास्तव में ही इनका प्रभाव अपने आप में अचूक और निश्चित है, आप स्वयं इन प्रयोगों को आजमा कर देख लें, आप अनुभव करेंगे कि इन प्रयोगों-साधनाओ के माध्यम से आज के युग में भी हम मनोवांछित कार्य सम्पन्न कर सकते है और कार्य सिद्धि में सफलता प्राप्त कर सकते है।

इन प्रयोगों को आप अपने लिये या अन्य किसी के लिये भी संपन्न कर सकते है, दोनों ही रूपों में इनका प्रभाव पड़ता है। साधक को चाहिये कि वह इन प्रयोगों को पूर्ण श्रद्धा और विश्वास के साथ करें। और जिस प्रकार से बताया गया है उसी प्रकार से इन प्रयोगों को संपन्न करने पर अचूक और तुरन्त सफलता दिखाई देती है।

(१) वशीकरण प्रयोग

वशीकरण का तात्पर्य किसी को भी अपने अनुकूल बना लेने की क्रिया हैं। वह चाहे पुरूष हो और चाहे स्त्री। यदि यह प्रयोग हम उस पर आजमा लें तो इसका तुरन्त और अनुकूल प्रभाव अनुभव होता है, आप स्वयं इस प्रयोग को करके देख सकते है।

किसी भी शुक्रवार के दिन पांच हकीक पत्थर ले लें और एक सियारसिंगी प्राप्त कर लें फिर सिन्दूर से सियारसिंगी को पूरी तरह से रंग दें और उस पर कुंकुम से उस पुरुष या स्त्री का नाम लिखें जिसे आपको अपने पूर्ण वश में करना हैं, यह प्रयोग रात्रि को करें।

जिस सियार सिंगी पर उसका नाम लिखा है उसके आगे ये पांच हकीक पत्थर रख दें और तेल का दीपक लगा दें फिर सामने बैठकर निम्न मंत्र की मात्र एक माला मंत्र जप करें।

मन्त्र

ठं ठं बिरमा ठं ठं विष्णु। अमुक को वश में करे रूद्र को तिरसूल। न माने तो बांधे, रुंडे, वश में होय। कहियो करे, काली मांई की दुहाई। ठं ठं।

जब मंत्र जप पूरा हो जाय तब एक लाल कपडे में वह सियारसिंगी तथा पांचों हकीक पत्थर बांध कर किसी मिट्टी के वर्तन में या कुल्हड़ में रख दें, और उसे पानी से भर दें। इस कुल्हड़ को घर में किसी भी स्थान पर रख दे या जमीन में गाड़ दे। जब तक ये वस्तुएं कुल्हड़ में रहेगी तब तक वह व्यक्ति पूर्णतः वश में रहेगा और जिस प्रकार से चाहें उसी प्रकार से वह जीवन में आज्ञा पालन करता रहेगा यह, प्रयोग अनुभूत है और इसका तुरन्त प्रभाव होता है।

(२) परी हाजरात प्रयोग

परी हाजरात प्रयोग का मतलब उस रूह या परी को वश में करना है जो वश में होने के बाद साधक का प्रत्येक कार्य पूरा करती है. और उससे जो भी पदार्थ मंगाते है वह पदार्थ तुरन्त लाकर देती है, यही नहीं अपितु अनुभव में यह आया है कि इस प्रकार का प्रयोग संपन्न करने से उस हाजराज परी को हम जब भी बुलायें, वह हाजिर होती है, और उसके द्वारा स्वर्ण, वस्त्र एवं अन्य पदार्थ आसानी से मंगा सकते है, जंगल में या कहीं पर भी उसके द्वारा भोजन पदार्थ शून्य में से मंगा लेना या वस्त्र रूपये पैसे आदि प्राप्त कर लेना परी हाजरात प्रयोग कहा जाता है।

इसका प्रयोग इस प्रकार हैं– शुक्रवार की शाम को जब सूर्य डूब रहा हो तब साधक किसी मजार या कब्र के पास जाय और उसे भक्तिभाव से प्रणाम करें अपने साथ एक पानी का लोटा और हीने का इत्र साथ लेकर जावे। साथ ही छोटा सा हरे रंग का आधा मीटर लम्बा वस्त्र तथा "सिद्धि फल" साथ लेता हुआ जावे, वहां जाकर मजार को प्रणाम करें और उसके सामने कपड़ा बिछा दें उस पर खुद बैठ जाय और अपने चारों ओर पानी का घेरा बना दें, और फिर बायें हाथ में सिद्धि फल लेकर मुठ्ठी में बंद कर ले, और दाहिने हाथ से हकीक माला के द्वारा निम्न मंत्र की एक माला फेरे–

मन्त्र

ॐ हिलिया रे हिलिया। सारा काम सिरिया। अणंग करे दुहाई। परी को वश में लाई जबर जूर वश में लाई। न हिले, न हले। कियो करे। हुकुम मे रहे। कारज करे। न करे तो अणंग पाल की दुहाई।

जब मंत्र पूरा हो जाय तो लोटे में बाकी बचा हुआ पानी मजार पर चढ़ा लें और हीने का इत्र लगा दें, पास में ही वह हरा वस्त्र रख दें और सिद्धी फल को लेकर घर आ जाय। "परिहाजरा" पूर्णतः वश में हो जाती है और उनके बाद जब भी उसे आज्ञा दी जाती है तो उस आज्ञा का तुरन्त तथा निश्चित रूप से पालन होता है।

(३) विद्वेषण प्रयोग

इसका तात्पर्य परस्पर लड़ाई-झगड़े करवाना है। यदि शत्रु परेशान कर रहा हो और बाधाएं दे रहा हो तो इस प्रयोग को संपन्न किया जा सकता है।

किसी भी मंगलवार के दिन दोपहर को श्मशान जाकर वहां से कोई हड्डी का टुकड़ा ले आवें और उसे अपने घर में लाने की अपेक्षा मार्ग में ही किसी काले कपडे में पांच हकीक नग तथा वह हड्डी का टुकड़ा बांध कर शत्रु के घर में डाल दें, तो उस दिन से शत्रु के घर में परस्पर लड़ाई झगडे प्रारम्भ हो जायेंगे, और घर के सदस्यों में मतभेद मारपीट और लड़ाई-झगडे बने रहेंगे।

(४) व्यापार वर्द्धक प्रयोग

यदि व्यापार कमजोर पड़ गया हो और व्यापार में उन्नति नही हो रही हो या आमदनी कम हो गई हो तो इस प्रयोग को किया जा सकता है।

शनिवार की रात को एक मुट्ठी भर काली मिर्च तथा तीन गोमती चक्र लेकर किसी लाल पोटली में बांध दें और अपने सामने रखकर एक तेल का दीपक लगा दें तथा निम्न मन्त्र की पांच माला मंत्र जप उस पोटली पर करें—

मन्त्र

भंवरा भंवर करे मन मेरा। डंडी खोल वैपार बढेरा। वैपार बढ़ा और कारज कर। नहीं करे तो काली मैया काल कालजो फोड़ खावे। ठं ठं फट्।।

दूसरे दिन सुबह दुकान पर जाकर दूकान को स्वच्छ पानी से धो ले, और दरवाजे पर ही चोखट पर वह लाल पौटली बांध दें। ऐसा करने पर व्यापार बढ़ने लगेगा, और जब तक वह पोटली बंधी हुई रहेगी तब तक बरा-बर आर्थिक उन्नति होती रहेगी। वास्तव में ही यह प्रयोग आजमाया हुआ है, और साधक इस छोटे पर महत्वपूर्ण प्रयोग को संपन्न कर इसका चमत्कार देख सकते है।

(५) रोग मिटाने का प्रयोग

यदि किसी पुरुष या स्त्री को बीमारी हो और डाक्टरों की समझ में नहीं आ रही हो अथवा इलाज कराने पर भी उसमें सफलता नहीं मिल रही हो तो इस प्रयोग को आजमाया जा सकता है।

मैंने अनुभव किया है कि यदि इस प्रयोग को किया जाय तो रोगी को तुरन्त आराम अनुभव होता है और यदि रोग बड़ा हो तो दो तीन बार इस प्रयोग को करने से उसे रोग से मुक्ति प्राप्त हो जाती हैं।

किसी भी मंगलवार के दिन तांबे के गिलास में पानी भर लें और उसमें चिरमी के तीन टुकडे डाल दें, और फिर उस गिलास को सामने रख कर निम्न मंत्र का २१ बार उच्चारण करें।

मंत्र

जै जै गुणवन्ती। वीर हनुमान। रोग मिटे और खिले खिलाव। कारज पूरण करे पवन सुत। जो न करे तो मां अंजनी को दुहाई। सबद साचा पिण्ड काचा पुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।।

इसके बाद उस पानी को रोगी को पिला दें तथा चिरमी के टुकड़ों को उसके चारों ओर घुमाकर दक्षिण दिशा की ओर फेंक दें,. ऐसा करने पर रोगी को तुरन्त आराम अनुभव होता है।

मेरा यह अनुभव है कि किसी को भूत-प्रेत बाधा हो या उसे मिरगी आ रही हो या रात को. बड़बड़ा रहा हो अथवा उसे कोई ऐसी बिमारी हो जो समझ में नहीं आ रही है तो इस प्रयोग को अवश्य ही करना चाहिये। यह छोटा सा प्रयोग है ,परन्तु इसका असर तुरन्त एवं अचूक होता है। मैंनें इस प्रयोग को जितनी बार भी आजमाया है उतनी ही बार मुझे सफलता मिली है। साधक को चाहिये कि वह अपने पास चिरमी के १०–१५ टुकडे रखे, और एक बार के प्रयोग में तीन चिरमी के टुकड़ों का उपयोग करें। वास्तव में ही यह प्रयोग जन कल्याण हेतु करना चाहिये।

(६) कार्य सिद्धि प्रयोग

यदि कोई जरूरी काम हो या किसी अधिकारी से किसी बात के लिये "हां" करानी हो अथवा जिस काम के लिये हम जा रहे हो और वह कार्य हमारा अवश्य ही पूरा हो तो इस प्रयोग को संपन्न किया जा सकता है।

रवाना होने से पहले एक बिल्ली की नाल के चार टुकडे कर अपने पैर के नीचे मसल कर यात्रा करे तो वह जिस काम के लिये रवाना होता है वह कार्य अवश्य ही पूरा होता है। उदाहरण के लिये रुपये लेने हों व्यापारिक समझौता करना हो, या लड़की की सगाई आदि के लिये जाना हो या किसी अधिकारी से सिफारिश करवानी हो अथवा ऐसा कोई भी कार्य हो तो इस प्रयोग

को आजमाया जा सकता है।

मेरे अनुभव में यह आया है कि इस प्रकार का प्रयोग संपन्न करने पर अवश्य ही सफलता प्राप्त होती है और हम जिस काम के लिये रवाना होते है वह कार्य निश्चित रूप से सिद्ध होता है।

(७) अनायास धन प्राप्ति प्रयोग

कई बार प्रयत्न करने पर भी आकस्मिक धन प्राप्ति की संभावनाएं नहीं बनती तो इस प्रयोग को आजमाना चाहिये।

इस प्रयोग से कई लाभ हो सकते है. यदि घर में द्रव्य गड़ा हुआ हो तो इसके द्वारा आसानी से पता चल जाता है। यदि दुर्भाग्य पीछा नहीं छोड़ रहा हो तब भी इस प्रयोग को आजमाया जा सकता है। यह प्रयोग अपने आप में अत्यन्त महत्वपूर्ण है।

किसी भी शुक्रवार के दिन ठीक दोपहर को अथवा ठीक मध्यरात्रि को यह प्रयोग संपन्न किया जाता है, एक मधुरूपेण एक मुखी रुद्राक्ष लेकर जहां तीन रास्ते मिलते हों वहां पर जाकर किसी बर्तन में या मिट्टी के पात्र में वह एकमुखी रुद्राक्ष सवा पाव मिठाई सात लाल, मिर्च, तथा सात नमक की डलियां लेकर चौराहे पर रख दें, और हाथ में जो पानी का लोटा लेकर जावें, उस पानी से उस मिट्टी के बर्तन के चारों ओर पानी का घेरा खींच लें, और वापिस घर को लौट आवें।

वापिस लौटते समय मुड़कर नहीं देखे तो कुछ ही दिनों में उसे बहुत अच्छे अनुकूल समाचार मिल जाते है या लोटरी से धन अथवा आकस्मिक द्रव्य प्राप्त होने की संभावनाएं बढ जाती है।

इस प्रयोग से निश्चित रूप से दुर्भाग्य समाप्त हो जाता है, और उसी दिन से उसकी उन्नति होने लगती है।

वास्तव में ही यह प्रयोग मैंने कई बार आजमाया है, और जब-जब भी इस प्रयोग को आजमाया है पूर्ण सफलता ही प्राप्त हुई है।

ऊपर मैंने कुछ प्रयोग उन साधकों के लिये दिये है जो चमत्कार में विश्वास करते है, और जो तुरन्त सफलता चाहते है उनको चाहिये कि वे इन प्रयोगों को आजमाये या अपने परिचितों को बताकर उन्हें इन प्रयोगों को करने के लिये कहें तो वे यह जानकर अत्यन्त प्रसन्न होंगे कि उनका प्रभाव तुरन्त प्रामाणिक और अचूक होता है।

(८) अप्सरा प्रयोग

शुक्रवार को किसी मजार पर या उसके पास "बीर बहुटी" रख दें तथा रविवार को वहां से वापिस ले आवे।

फिर रविवार की रात को कमरे में उत्तर की ओर मुंह कर "अप्सरा माला" से ११ माला मंत्र जप करे।

मंत्र

"अपसरा रे अप्सरा। मैं तेरो भरतार। तू मेरी छाया। मेरा कारज कर। बस में होय। हुकम मान। जो कहूं सो कर, जो न करे तो पीर सुलेमान की दुहाई।।

ग्यारहवीं माला पूरी होते होते अप्सरा सामने आवे तो ताली बजा कर वचन ले लें। ऐसा करने पर वह सुन्दरी अप्सरा जीवन भर साधक के वश में रहती है।

सोमवती अमावस्या (३-७-८९) के अवसर पर

सिद्धिदा

सिद्धेश्वरी साधना

इन पंक्तियों के माध्यम से मैं एक विशेष साधना पद्धति पत्रिका पाठकों और साधकों को दे रहा हूं, अपने आप में अदभुत चमत्कारिक यह सिद्धेश्वरी साधना है, जिसके माध्यम से जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में पूर्ण सिद्धि संभव है। बिहार और भारत के दक्षिणी प्रदेश में तो सिद्धेश्वरी साधना को जीवन का प्रमुख आधार माना है। कामाक्षा आदि पीठों में सिद्धेश्वरी साधना को जीवन की समस्त कामनाओं की सिद्धि माना है।

सिद्धेश्वरी साधना का तात्पर्य जीवन में सभी दृष्टियों से पूर्ण सिद्धि प्राप्त करना है। जो अपने जीवन में एक बार सिद्धेश्वरी साधना कर लेता है, उसे अपने जीवन में किसी प्रकार की कोई कमी नहीं रहती। जो श्रेष्ठ साधक है, जो अपने जीवन में तीर की तरह आगे बढ़कर पूर्ण सफलता प्राप्त करना चाहते है, जो अपने जीवन में पूर्ण सिद्धि पुरूष बनना चाहते है, उन्हें अवश्य ही इस अवसर का लाभ उठाना चाहिए और सफलता प्राप्त करनी चाहिए।

यह एक दिन की साधना है, और सोमवती अमावस्या के दिन ही सम्पन्न की जा सकती है।

सबसे पहले साधक श्रद्धा के साथ सिद्धेश्वरी साधना को सम्पन्न करने का निश्चय करें, और भक्ति भाव से इस साधना को सम्पन्न करे। प्रातः काल उठकर शुद्ध जल से स्नान करे, और सफेद धोती धारण करे, अपने कन्धों पर भी सफेद धोती ही डाले फिर अपने पूजा स्थान में उत्तर की ओर मुंह कर बैठ जाय, साधक चाहे तो अपनी पत्नी के साथ भी इस साधना की सिद्धि कर सकता है।

इस साधना को पुरूष या स्त्री कोई भी कर सकता है, उच्चकोटि के योगियों का इस संबंध में यह कथन है, कि चाहे, कितनी ही कठिन समस्या हो, चाहे कैसी ही

बाधा हो, इस साधना से तुरन्त सफलता प्राप्त होती है, और जो मन में निश्चय होता है, वह अवश्य ही साधना सम्पन्न होते होते पूरा हो जाता है। कई बार तो साधना के समापन के पूर्व ही अनुकूल समाचार प्राप्त हो जाते है।

साधना विधि

सबसे पहले साधक उत्तर की ओर मुंह कर बैठे और अपने वाम भाग या बांई ओर पांच चावल की ढेरिया बना कर हाथ जोड़े और उच्चारण करे—

(१) पृथिव्यै नमः (२) आधार शक्तये नमः (३) अनन्ताय नमः, (४) कूर्माय नमः, (५) शेष नागाय नमः, इस प्रकार से इन पांचों को स्थापित करते हुए इनको प्रणाम करें।

फिर हाथ में जल लेकर संकल्प करें, कि मैं समस्त कामनाओं की पूर्ति और पूर्णतः भोग, यश, सम्मान के साथ मनोवांछित कामना पूर्ति के लिए मैं अमुक गोत्र का व्यक्ति अमुक नाम का साधक यह साधना सम्पन्न कर रहा हूं।

फिर दाहिने हाथ की ओर एक लाल वस्त्र बिछाकर उस पर नौ ढेरिया चावल की बनावे और नवग्रहों की स्थापना करते हुए, हाथ जोड़ कर उन्हें प्रणाम करें (१) श्री सूर्याय नमः, (२) श्री चन्द्रमाय नमः (३) श्री भौमाय नमः (४) श्री बुद्धाय नमः (५) श्री गुरूवै नमः (६) श्री शुक्राय नमः (७) श्री शनिश्चर्यै नमः (८) श्री राहवे नमः (९) श्री कैतवै नमः इस प्रकार इन नवग्रहों की सामान्य पूजा करे।

सिद्धेश्वरी प्रयोग

इसके बाद दुर्लभ सिद्धेश्वरी यंत्र को सामने किसी पात्र में स्थापित कर दे और कच्चे दूध से उसे स्नान करावे फिर जल से धो कर उस पात्र को स्वच्छ कर पात्र में कुंकुम का त्रिकोण बनावे और उस पर सिद्धेश्वरी यंत्र को रख दें। यह सिद्धेश्वरी यंत्र अपने आपमें ही अत्यन्त दुर्लभ अद्वितीय और महत्वपूर्ण माना गया है। इसके बाद हाथ में पुष्प लेकर भगवती श्री सिद्धेश्वरी देवी का ध्यान करें—

उद्यन्मार्तण्ड–कान्ति–विगलित--कवरी कृष्ण-वस्त्रावृतांगाम्

दण्डं लिंगं कराब्जैर्वरमथ भुवनं सन्दधतीं त्रिनेत्राम्।

नाना रत्नैर्विभातां स्मित मुख-कसलां सेवितां देव सर्वे

र्माया–राज्ञीं नमौदभूत स-रवि-कल तनूमाश्रयं ईश्वरी त्वाम् ॥

ऐसा कहते हुए हाथ में लिये पुष्प यंत्र को अर्पित कर दें, और भक्तिभाव से इस यंत्र को प्रणाम करे।

इसके बाद शास्त्रों के विधान के अनुसार यंत्र की पूरी पूजा करे, पूरी पूजा से मेरा तात्पर्य-केसर का तिलक करे, अक्षत, पुष्प चढ़ावे, नैवेद्य का भोग लगावे और सामने पांच दीपक तथा अगरवत्ती प्रज्वलित करें। ये पांचों दीपक शुद्ध घृत के होने चाहिए और ये पांचों ही दीप चौबीस घण्टे तक अखण्ड प्रज्जवलित रहेंगे अर्थात् सोमावती अमावस्या को दिन के जितने बजे ये दीप प्रज्जवलित किये है, दूसरे दिन उतने ही बजे तक ये दीप अखण्ड लगते रहने चाहिए।

इसके बाद अपने घर में सिद्धेश्वरी देवी का आहवान निम्न मंत्रों से करे—

आहवान

ॐ एं ह्लीं श्रीं सिद्धेश्वरी सर्व-जन मनोहारिणी दुष्ट मुख स्तम्भिनी, सर्व स्त्री पुरूषकर्षिणी शत्रु भाग्य त्रोटय त्रोटय सर्व शत्रुणां भजय भंजय सर्व शत्रुणां दलय दलय निर्दलय निर्दलय स्तम्भय स्तम्भय उच्चाटय उच्चाटय सर्व जन वशं कुरू कुरू स्वाहा। देवि सिद्धेश्वरि इहागच्छ इहा तिष्ठ मम मनोवांछित कामना सिद्धयर्थं मम सपरिवारं रक्ष रक्ष सिद्धि देही देही नमः

उपरोक्त मंत्र अपने आप में अत्यन्त महत्वपूर्ण है, और साधक को चाहिए कि वह उपरोक्त आहवान मन्त्र का तीन बार उच्चारण कर, भगवती सिद्धेश्वरी देवी को अपने घर में स्थापित करे।

इसके बाद नारियल तोड़ कर उसकी गिरी का भोग लगावे, और हाथ में जल ले कर विनियोग करे–

विनियोग

ॐ अस्य श्री सिद्धेश्वरी-कवचस्य वशिष्ठ ऋषिः श्री सिद्धेश्वरी देवता, सकल, कार्यार्थ–सिद्धये जपे विनियोगः

इसके बाद सिद्धेश्वरी कवच के पाठ करने का विधान है, इसमें कोई मंत्र नहीं है, अपितु सिद्धेश्वरी कवच को ही मंत्र माना है। चौबीस घण्टों में १०८ बार सिद्धेश्वरी कवच का पाठ करना ही पूर्ण सिद्धि है।

प्रत्येक पांच कवच पाठ के बाद एक बार क्षमा-स्तोत्र का पाठ करे इस प्रकार २४ घण्टों में यह प्रयोग सम्पन्न कर दिया जाना चाहिए। साधक चाहे तो प्रत्येक इक्कीस पाठ के बाद कुछ समय के लिए विश्राम कर सकता है।
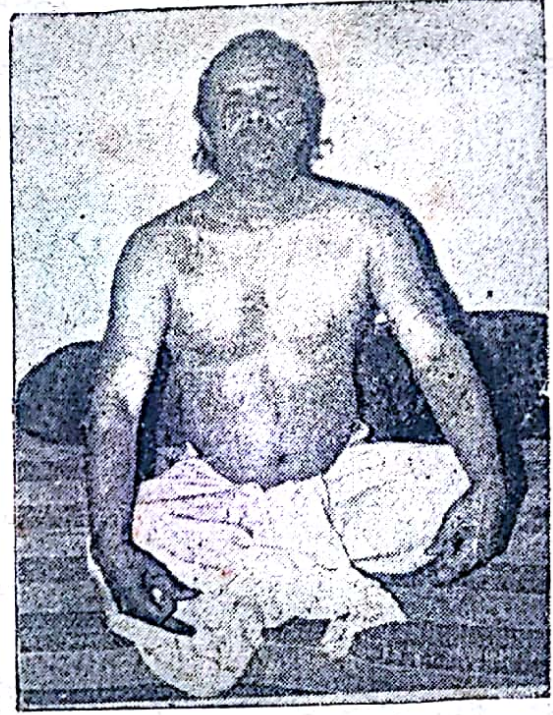
पूज्य गुरुदेव

सिद्धेश्वरी कवच

संसार तारिणी सिद्धा पूर्वस्यां पातु मां सदा,
ब्रह्माणी पातु चाग्नेयां दक्षिणे दक्षिण प्रिया ॥१॥

नैऋत्यां चण्ड मुण्डा च पातु मां सर्वतः सदा,
त्रि-रूपा सा मता देवी प्रतीच्यां पातु मां सदा ॥२॥

वायव्यां त्रिपुर पातु ह्य त्तरे रूद्र-नायिका
ईशाने पद्म-नेत्रा च पातु ऊर्ध्वं त्रिलिंगका ॥३॥

दक्ष-पार्श्वे महा-माया वाम पार्श्वे हर-प्रिया
मस्तकं पातु मे देवी सदा सिद्धा मनोहरा ॥४॥

भालं मे पातु रूद्राणी नेत्रं भुवन-सुन्दरी
सर्वत: पातु में वक्त्रं सदा त्रिपुर-सुन्दरी
।।५।।

श्मशाने भैरवी पातु स्कन्धा मे सर्वत: स्वयम्,
उग्र पार्श्व महा-ब्राह्मी हस्तौ रक्षतु चाम्बिका
।।६।।

हृदयं पातु वज्रांगी निम्न-नाभिर्नभस्तले,
अग्रत: परमेशानी परमानन्द विग्रहा ।।७।।

पृष्ठत: कुमुदा पातु सर्वत: सर्वदा वतात्
गोपनीयं सदा देवी न कस्मैचित् प्रकाशयेत्
।।८।।

य: कश्चित् श्रृणयादेव तत् कवचं भैरवोदितं,
संग्रामे स जयेत शत्रुं मातंगमिव केशरी ।।९।।

न शस्त्राणि न च अस्त्राणि तद् देहे प्रविशन्ति वै,
श्मशाने प्रान्तरे दुर्गे घोरे निगड़ बन्धने ।१०।।

नौकायां गिरि-दुर्गे च संकटे प्राण संशये,
मन्त्र तन्त्र भये प्राप्ते विष वन्हि भयेषु च
।।११।।

दुर्गति सन्तरेद घोरां प्रयाति कमला पदं,
वन्ध्या वा काक वन्ध्या वा मृत वत्सा च यांगना
।।१२।।

श्रुत्वा स्तोत्रं लभेत् पुत्रं स-धनं चिर-जीविनं,
गुरौ मन्त्रै तथा देवे वन्दने यस्य चौत्तमा।।१३।।

धीर्यस्य समतामेति तस्य सिद्धिर्न संशय: ।।१४।।

इसके बाद साधक "क्षमापन स्तोत्र" करे, जिसे मैं स्पष्ट कर रहा हूं।

क्षमापन स्तोत्र

अपराध सहस्राणि क्रियन्ते हर्निशं मया, ।
दासो यमिति मां मत्वा क्षमस्व परमेश्वरि ।।

आवाहन न जानामि न जानामि विसजनं, ।
पूजा चैव न जानामि क्षमस्व परमेश्वरि ।।

मन्त्र-हीनं क्रिया–हीनं भक्ति-हीनं सुरेश्वरि, ।
यत्पूजित मया देवि परिपूर्ण तदस्तु मे ।।

अज्ञानद्विस्मृते भ्रान्त्या यन्न्यूनमधिकं कृतम् ।
तन्सर्व क्ष्यम्यता देवि प्रसीद परमेश्वरि ।।

सिद्धेश्वरि जगन्मात: सच्चिदानन्द-विग्रहे, ।
गहाणार्चामिमां प्रीत्या प्रसीद परमेश्वरि ।।

गुह्याति-गुह्य गोप्त्री त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपं,
सिद्धिर्भवतु में देवि त्वत्प्रसादात्सुरेश्वरि ।।

एक बार मैं पुन: साधकों को याद दिला दूं कि प्रत्येक पांच सिद्धेश्वरी कवच के पाठ के बाद एक बार क्षमापन स्तोत्र का उच्चारण किया जाता है। क्षमापन स्तोत्र की गणना नहीं की जाती, कुल १०८ सिद्धेश्वरी कवच के पाठ २४ घण्टों में आवश्यक है, जब पाठ समाप्त हो जाय तब श्रद्धायुक्त आरती करे, और सिद्धेश्वरी कवच को पूजा स्थान में स्थापित कर दे।

वास्तव में ही यह प्रयोग संसार का श्रेष्ठतम और अपने आपमें अद्वितीय प्रयोग है, जिसका उपयोग साधकों को करना चाहिए, और मैंने इस गोपनीय प्रयोग को इसी निमित्त पत्रिका के इस अंक में स्पष्ट किया है, मुझे विश्वास है कि साधक इससे लाभ उठायेंगे। ●

(कवर के दूसरे पृष्ठ का शेष)

प्रयोग विधि

श्रावण का प्रारम्भ १९ जुलाई को रहा है, अतः १९ जुलाई को परिवार का मुखिया, साधक या घर का कोई भी सदस्य स्नान कर शुद्ध, स्वच्छ वस्त्र धारण कर किसी पात्र में केसर से "ॐ नमः शिवाय" लिख दें और उस पर भगवान "सिद्धेश्वर" की स्थापना कर दें। सिद्धेश्वर एक विशेष प्रकार का ज्योतिर्लिंग है जिसे घर में स्थापित करना ही, जीवन की पूर्णता है। विशेष मंत्रों से सिद्ध ऐसे सिद्धेश्वर ज्योतिलिंग को पात्र में स्थापित कर उनकी संक्षिप्त पूजा करे, केसर, गुलाल, आदि चढाकर यदि संभव हो, तो बिल्व पत्र भगवान सिद्धेश्वर पर चढावे इसके बाद हाथ में जल पात्र लेकर उसमें थोड़ा सा कच्चा दूध मिला ले और स्वयं या पति पत्नी दोनों धीरे धीरे उस सिद्धेश्वर शिवलिंग पर 'ॐ नमः शिवाय' का उच्चारण करते हुए, जल चढ़ावे। धीरे धीरे उस पात्र में इतना जल चढ़ा देना चाहिए, कि भगवान सिद्धेश्वर का शिवलिंग उस जल में डूब जाय, उस पूरे दिन यह ज्योतिलिंग जल में डूबा रहे।

इसके बाद सामने दीपक लगावे, अगरबत्ती जलावे और निम्न विशेष गोपनीय मंत्र की पांच माला मंत्र जप करे।

सिद्धेश्वर मन्त्र

ॐ ह्रीं ऐं हर गौर्ये रुद्राय अनंग रूपाय सिद्धिप्रदाय सिद्धेश्वराय नमः

इस मंत्र को पुरूष या स्त्री कोई भी जप सकता है, रुद्राक्ष की माला से ही इस मंत्र का जप होना चाहिए। इसके बाद भगवान शिव की आरती करे, और प्रसाद चढावे इस प्रसाद को गली के बालकों मे बांट दे।

दूसरे दिन उस जल का पान थोड़ा थोड़ा घर के सभी सदस्य करे या जल किसी पात्र में लेकर थोड़ा थोड़ा घर के सभी सदस्य पी ले जिससे शरीर स्थित रोग निवृत्ति हो सके और बाकी जल को पूरे घर में छिड़क दें, इस प्रकार नित्य पूरे तीस दिन करे, इसका समापन १७ अगस्त ८९ को करें।

सोमवार के दिन साधक भगवान शिव को ११ पुष्प या ११ बिल्व पत्र चढावे और ११ माला मंत्र जप करे। इस महीने निम्न तारीखों को सोमवार है।

२४ जुलाई ८९, ३१ जुलाई ८९, ७ अगस्त ८९, १४ अगस्त ८९ इस प्रकार उपरोक्त चार सोमवारों को ११ माला मंत्र जप से विशेष प्रयोग सम्पन्न करे और १७ अगस्त को ११ छोटे छोटे बालकों को भोजन करा दे और उस सिद्धेश्वर शिवलिंग को पूजा स्थान में स्थापित कर दे।

यह इस वर्ष का श्रेष्ठतम और अद्वितीय प्रयोग है, जो सौभाग्य से प्राप्त हुआ हैं, प्रत्येक साधक को अपने घर में सिद्धेश्वर की स्थापना करनी ही चाहिए और इस प्रयोग को स्वयं या घर का कोई सदस्य सम्पन्न करे, आप स्वय इस प्रयोग का चमत्कार और प्रभाव हाथों हाथ अनुभव करेंगे।

रजि० नं० ३५३०५/८१ पोस्टल एल. प्रार. जे. ३६६७/८६-८७